समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

Postal R.No. UA/DO/16/2015-2017, RNI-NO.38653/80

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक-संरक्षक : युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 जून 2016
(वर्ष-28, अंक-24)
शांतिकुंज, हरिद्वार
वार्षिक चंदा ₹ 40/-
विदेश में ₹ 500/-
प्रति अंक ₹ 2/-
E-mail : news@awgp.in
news.shantikunj@gmail.com

लोकसेवा आत्म-विज्ञापन का आडम्बर न बनने पाये

वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य (वाङ् मय खंड-64, राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने-पृष्ठ 4.86 से संकलित-सम्पादित)

समाजसेवा समाज के पिछड़े और समस्याग्रस्त लोगों की कठिनाइयों को सुलझाने व उन्हें आगे लाने का नाम है। यह जितनी ही यज्ञ भावना के साथ की जायेगी, समाजसेवी को बदले में उतना ही आत्मसंतोष होगा, आत्मतृप्ति व लोकश्रद्धा मिलेगी, जो सस्ती वाहवाही, झूठे सुख और थोथी श्रद्धा से हजार गुना कीमती है।

करुणा जागे तो असमानता मिटे

सभी मनुष्यों के विकास और उन्नति की गति एक समान नहीं है। कोई व्यक्ति वैज्ञानिक उपलब्धियों के लिए चाँद पर चला जाता है तो कोई व्यक्ति गाँव के सिन्दूर लगे देवी-देवताओं को पूजकर उनसे रोग निवारण की प्रार्थना को परम पुरुषार्थ समझता है। एक व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से हजारों रुपये अपने शौक-मौज में खर्च कर सकता है, वहीं दूसरे व्यक्ति को अगली खुराक के लिए तपती हुई देह से जी-तोड़ मेहनत करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। एक व्यक्ति अच्छी सोसायटी और शिक्षा-दीक्षा की दृष्टि से फॉरेन रिटर्न या महापण्डित हो सकता है तो दूसरे व्यक्ति को अपने बेटे की नौकरी लग जाने का तार भी अधकचरे पढ़े-लिखे व्यक्ति से पढ़वाना पड़ता है। इसी प्रकार रहन-सहन की दृष्टि से एक व्यक्ति ऊँचे तबके का है तो दूसरे को रहने के लिए झोंपड़ी और पहनने को साधारण कपड़े भी मुश्किल से मिल पाते हैं।

असमानता या पिछड़ेपन की निम्नतर अवस्था और उन्नति का चरम शिखर हम मानव समाज में यत्र-तत्र बड़ी आसानी से देख सकते हैं। यों सबकी स्थिति, सामर्थ्य और परिवेश को देखते हुए प्रत्येक व्यक्ति समान हो भी नहीं सकता, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि आदमी-आदमी में राई और पहाड़ जैसी विषमता हो। कम से कम परिस्थितियाँ ऐसी न हों कि कोई साधनहीन पिता अपनी मेहनती, मेधावी, सुयोग्य संतान को पढ़ा भी न सके।

राई और पहाड़ के इस अंतर को पाटने के लिए, पिछड़ेपन को दूर करने के लिए और उन समस्याओं को सुलझाने के लिए जो कि जीते जी मनुष्य को नारकीय यातना में झुलसाती रहती हैं, करुणा की आवश्यकता है। करुणा अर्थात् जो अपने से पीछे हैं, उन्हें आगे लाने की कसक। अर्थात् भ्रातृभाव से छोटे भाइयों का सहयोग कर उन्हें प्रगति की दौड़ में सम्मिलित कराने के प्रयास।

पारिवारिक भाव का विकास हो

यहाँ करुणा से आशय दया का नहीं है। दया का शाब्दिक अर्थ तो होता है कि आप अपने से कमजोर व्यक्ति की सहायता कर उस पर कृपा कर रहे हैं। करुणा में कृपा का भाव या ऐसा विचार जरा भी नहीं होता कि मैंने अमुक व्यक्ति की सहायता कर बहुत बड़ा काम कर दिया।

करुणा एक कर्तव्यनिष्ठा से प्रेरित सहयोग और सेवा की भावना है, जैसे कि एक परिवार में होती है। परिवार का कोई सदस्य बीमार हो जाये तो दूसरे स्वस्थ सदस्य भाग-दौड़कर उसकी सेवा-सुश्रूषा करते हैं, डॉक्टर को बुलाते हैं, दवाई देते हैं; अर्थात् अपने बस में जो है वह सब कुछ कर लेते है। जब वह स्वस्थ हो जाता है तो उससे किसी प्रकार के प्रत्युपकार की चाह नहीं होती, न ही इस बात का विज्ञापन करते हैं कि हमने अपने भाई की सेवा-सुश्रूषा बड़ी भाग-दौड़ और हायतौबा मचाकर की।

व्यापारी मानसिकता से बचें

बिना प्रत्युपकार किए और बिना प्रतिदान माँगे किया गया सहयोग ही सच्ची सेवा है। यह भाव न हो कि हम अपने भाई की सेवा-सुश्रूषा करेंगे तो बदले में वह हमारा गुलाम हो जायगा। समाज सेवा में ऐसी निःस्वार्थ भावना न हो तो वह किसी व्यापार से कम नहीं है। आध्यात्मिक विचारधारा का थोड़ा भी ज्ञान रखने वाले व्यक्ति यह अच्छी तरह जानते हैं कि बिना कुछ माँगे की गयी प्रभु की आराधना ही सच्ची आराधना है। अन्यथा बेटा, नौकरी, लड़की की शादी, नया मकान और लॉटरी खुल जाने की अपेक्षा रखते हुए किया गया भजन-पूजन भजन नहीं हो सकता है, कुछ और भले ही हो।

समाजसेवा-ईश्वर की सच्ची भक्ति

समाज सेवा को भी ईश्वर की भक्ति के समकक्ष रखा जा सकता है और एक मायने में तो यह प्रचलित ईश्वर-भक्ति के ढंग से ऊँचे स्तर की ही है। ईश्वर-भक्ति के नाम पर प्रतिमा पूजन कर प्रतीक उपासना करने वाले भक्त तो कई मिल जायेंगे, पर नर में ही नारायण का साक्षात्कार करके ईश्वर के व्यक्त स्वरूप की उपासना करने की निष्ठा ऊँचे स्तर की है और ऐसे ईश्वरनिष्ठ दुर्लभ होते हैं।

सब प्राणियों में भगवद्भाव रखना कठिन हो सकता है, क्योंकि यह अध्यात्म की उच्च कक्षा है। लेकिन हम इतना तो कर ही सकते हैं कि जिसकी भी सेवा करें, उसके प्रति प्रेमभाव या कर्तव्यनिष्ठा का दृष्टिकोण रखें। लेकिन इस युग में जिस प्रकार कई आध्यात्मिक सिद्धान्तों का अनर्थ किया गया है और आदर्शवादिता के नाम पर गलत रीति-नीति अपनाई गयी है, वही अनर्थ समाज सेवा के साथ भी हुआ है।

भटक रही है मानसिकता

कहा जा चुका है कि समाज सेवा एक पवित्र यज्ञ है। लेकिन जिस तरह हमने कई आध्यात्मिक आदर्शों के साथ अनाचार किया और अपने हीन स्तर के कारण उनके गौरव को घटाया, उसी प्रकार समाज सेवा के साथ-साथ स्वयं को भी समाजसेवी कहलाने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहे हैं।

आज पिछड़ों को ऊँचा उठाने, आगे बढ़ाने के भाव के साथ समाजसेवा की उमंग घटती जा रही है। लोगों में इसके लिए ईमानदार प्रयास करने के स्थान पर अपने आप को विज्ञापित करने की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है। आज लोग समाज सेवा करने के स्थान पर समाजसेवी कहलाना अधिक पसन्द करते हैं। इसलिए इस शब्द के साथ जुड़ी हुई शर्तों को पूरा करने की जगह महत्त्व इस बात को दिया जाता है कि कोई हमें साधना करते हुए देख रहा है अथवा नहीं। ध्यान इस पर नहीं रहता है कि हमारी साधना कैसी चल रही है, वरन् इस बात के लिए चिन्तित रहते हैं कि लोग हमें महत्त्व देते हैं अथवा नहीं।

यही कारण है कि लोग इस दिशा में नैष्ठिक प्रयास करने के स्थान पर अपने मुँह से अपनी बहादुरी और पराक्रम का परिचय ज्यादा देते हैं। यह नहीं देखते कि अपने प्रयासों से किसी का भला हुआ है अथवा नहीं, अथवा दूसरों का भला हो सके ऐसे प्रयास हम से हो पा रहे हैं अथवा नहीं, प्रधानता मिलती है अपने तमगे को चमकाने की।

सच्चे समाजसेवी की पहचान

सच्चाई तो यह है कि निष्ठावान समाज सेवक आत्म-प्रचार करने और अपनी सेवाओं का ढोल पीटने के स्थान पर मूक भाव से ही अहर्निश जनसेवा में लगे रहते हैं। चाहिए भी यही कि इस विशुद्ध साधना को पाखण्ड के रूप में नहीं, साधना के रूप में ही अपनाया जाय। इसलिए शुरुआत अपने से ही करनी चाहिए। इसका अर्थ है कि जिन आदर्शों की स्थापना हम समाज में होते हुए देखना चाहते हैं, उन आदर्शों को पहले हम अपने में उतारें और कथनी से नहीं करनी के उदाहरण से प्रस्तुत करें।

2 सम्पादकीय
■ गायत्री जयंती से वृक्षारोपण, हरीतिमा संवर्धन अभियान को गतिशील बनायें
■ योग दिवस के संदर्भ में कुछ निवेदन

गायत्री चेतना केन्द्र, मुम्बई के निर्माण के लिए आयोजित हुआ संकल्प समारोह 3

31 मई को पूरे देश में आयाजित हुई नशामुक्ति रैलियाँ 6-7

सिंहस्थ 2016 में सक्रियता का विवरण 10

11 भा.सं.ज्ञा.प. शांतिकुंज में प्रतिभाओं का सम्मान

योग दिवस पर व्यक्तित्व को परिष्कृत करने वाला जीवन दर्शन जन-जन तक पहुँचे 12

उत्तराखंड में भा.सं. ज्ञान परीक्षा आरंभ करायेगी प्रादेशिक सरकार 12

गायत्री जयंती से वृक्षारोपण, हरीतिमा संवर्धन अभियान को गतिशील बनायें

पुत्र मानकर नए पौधों को करें प्रेम से आरोपित। श्रेष्ठ मित्र-स्नेही बनकर, करें निरंतर संरक्षित॥
पितृ मानकर, श्रद्धाञ्जलि दें, वृक्षों का सम्मान करें। तरु विषपायी, शिव-हितकारी, जगती का कल्याण करें॥

सम्माननीय, पूजनीय हैं वृक्ष

वृक्ष समाज के विभिन्न वर्गों, धर्म-सम्प्रदायों, नास्तिकों, आस्तिकों; सभी के लिए सम्माननीय, पूजनीय हैं।

- **ये ब्रह्मारूप हैं,** क्योंकि भूमण्डल पर जीवन विस्तार के आधार हैं।
- **ये विष्णुरूप हैं,** क्योंकि जीवमात्र के पोषण का चक्र चलाते हैं।
- **ये शिवरूप हैं,** क्योंकि विकास हेतु चल रहे मंथन से उभरे विष को पी जाते हैं।
- **ये इन्द्र हैं,** क्योंकि वर्षा के आधार बनते हैं।
- **ये प्रचण्ड परमार्थी हैं,** लगाने वाले को शुद्ध पर्यावरण-पोषण देते हैं। ये भूमि-मिट्टी को सुरक्षित, भूमण्डल को संरक्षित, वायु को शोधित रखने में कुशल और समर्थ हैं। पत्थर मारने वालों को भी फल देते हैं। काटने वालों को भी चारा और उपयोगी लकड़ी देते हैं।
- **ये पुण्यदायी पुत्र हैं।** मनीषियों ने कुएँ बनवाने को पुण्यदायी कर्म कहा है। कुओं से अधिक बावड़ी, बावड़ियोंसे अधिक तालाब, तालाब से अधिक श्रेष्ठ संतान तथा श्रेष्ठ संतानों से भी अधिक पुण्यदायी वृक्षों को कहा है। यह उक्ति कोरी भावुकता नहीं, एक प्रामाणिक सत्य है। संतति के कर्मों के फल का अंश अभिभावकों को भी मिलता है। संतति सत्कर्म करे तो पुण्य और कुकर्म करे तो पाप का अंश अभिभवकों को मिलेगा। वृक्ष को संततिभाव से लगाने-विकसित करने वालों को सुनिश्चित रूप से पुण्य ही प्राप्त होता है। एक पुत्र को विकसित करने में जितना समय, श्रम, साधनों को लगाना पड़ता है, उतने में अनेक वृक्षों का आरोपण-संरक्षण करके प्रचुर पुण्य एवं यश कमाया जा सकता है।

इसलिए किसी भी भाव से वृक्षों का आरोपण और संरक्षण हर व्यक्ति के लिए श्रेष्ठ लाभकारी, पुण्यदायी कर्म है। इसे पूरी श्रद्धा और तत्परता से किया जाना चाहिए। इसके लिए अनुकूल समय भी आ गया है, इसलिए गायत्री जयंती पर्व से ही सुनिश्चित लक्ष्य निर्धारित करके, योजना बनाकर कार्य प्रारम्भ कर देना चाहिए। गायत्री जयंती, गुरुपूर्णिमा, हरियाली तीज, श्रावणी आदि पर्वों को अपनी योजना में शामिल करते हुए शारदीय नवरात्रि तक लक्ष्य पूरे कर लेने चाहिए।

योजना समग्र बनायें

वृक्षारोपण अभियान की योजना एकांगी नहीं, समग्र होनी चाहिए। इसके अन्तर्गत लोगों को इसका महत्त्व समझाने, प्रेरित और संकल्पित कराने के साथ उसके लिए समुचित व्यवस्थाएँ भी बनायी जानी चाहिए। जैसे पौध की उपलब्धि, स्थान एवं संसाधनों की व्यवस्था, अवसर विशेषों का चयन और उपयोग, रोपे गये पौधों को पोषण एवं संरक्षण प्रदान करना आदि। इन चरणों को ठीक से पूरा करने के लिए नीचे कुछ उपयोगी सूत्र दिए जा रहे हैं। क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुरूप उनका उपयोग करने-कराने के प्रयास किए जाने चाहिए।

पौध की प्राप्ति :- पौध की प्राप्ति के लिए निम्न लिखित स्त्रोतों का उपयोग किया जा सकता है।

- फलदार पौधे- उद्यान विभाग से।
- अन्य पौधे- वन विभाग व नर्सरी से।
- माली द्वारा कम लागत में बीज/कलमी पौधे तैयार किये जा सकते हैं।
- शक्तिपीठों, मंदिरों में यदि जगह है तो वहाँ भी पौध तैयार की जा सकती है।
- अपने घर की छोटी सी क्यारी में भी पौध तैयार कर सकते हैं।
- नगर निगम/पालिका से संपर्क करें।
- सार्वजनिक स्थान हेतु सरकारी नर्सरी से भी पौधे प्राप्त कर सकते हैं।

भूमि एवं संसाधन :- • ग्रामीण क्षेत्र में भूमि पर वृक्षारोपण हेतु संबंधित पटवारी से उस स्थान का खसरा निकलवायें। तत्पश्चात् उस भूमि पर वृक्षारोपण हेतु ग्राम पंचायत में प्रस्ताव पास करवाकर वृक्षारोपण करें, जिसमें पंचायत का सहयोग भी लिया जाये।

- रोड के दोनों ओर वृक्षारोपण हेतु पंचायत द्वारा तार फेन्सिंग करवाकर वृक्षारोपण करें, जिन्हें पालने की जिम्मेदारी आस-पास के दुकानदारों या रहवासियों को दी जा सकती है।
- रेलवे के भूभाग पर वृक्षारोपण करने के लिए रेल विभाग से अनुमति व सहायता ली जा सकती है।
- विद्यालयों मे ईको क्लब द्वारा प्रति वर्ष इस हेतु कुछ राशि माध्यमिक, हाईस्कूल व हायर सेकेन्ड्री शालाओं को प्राप्त होती है। प्राचार्य से चर्चा कर विद्यालयों में तरुमित्र योजना द्वारा विद्यार्थियों को पर्यावरण आन्दोलन से जोड़कर पौधारोपण कर उनके संरक्षण का दायित्व विद्यार्थियों को दे दें।
- नगरीय क्षेत्रों में नगर पालिका, निगम या नगर पंचायत से ट्री-गार्ड की व्यवस्था बनवाई जा सकती है।
- सस्ते बाँस खरीद कर बाँस की चिपली से भी सस्ते ट्री-गार्ड बनवाये जा सकते हैं। कंटीली तार का घेरा भी बना सकते हैं।
- राष्ट्रीकृत बैंक/बीमा/पेट्रोलियम कम्पनी भी वृक्षारोपण हेतु ट्री गार्ड व साधन उपलब्ध करवाती है, उनसे भी इस कार्य हेतु सहयोग लिया जा सकता है।

अवसर विशेष :- वृक्षारोपण के लिए निर्धारित क्षेत्र में वृक्षगंगा अभियान, धरती को हरी चूनर पहनाने के विशेष आयोजनों में भावनाशीलों एवं सम्पन्नों को तरुपुत्र, तरुमित्र आदि बनाकर अभियान को गतिशील बनाया जा सकता है। इसके अलावा निम्न अवसरों का भी समुचित उपयोग किया जा सकता है।

- अपने जन्मदिन अथवा विवाह दिवस पर।
- अपने पितरों की स्मृति में।
- पर्व-त्यौहार, गायत्री जयंती, ज्येष्ठ पूर्णिमा, गुरुपूर्णिमा, हरियाली तीज आदि प्रसंग में।
- नये भवन, परिसर के शुभारम्भ पर।
- यज्ञों, कथाओं में, संस्कारों के आयोजन में प्रसाद रूप में पेड़े के साथ-साथ पेड़ भी बाँटें।
- महाविद्यालयों /विद्यालयों में प्रवेश पर ज्ञान दीक्षा के अवसर पर।
- अपने गुरु व इष्ट को श्रद्धाञ्जलि स्वरूप वृक्ष लगायें।
- अपने नक्षत्र का वृक्ष लगायें।
- घरों में वास्तु अनुसार वृक्ष लगायें, वास्तु वाटिका बनायें।
- गाँव के देव स्थान को जाग्रत करें और त्रिवेणी (पीपल, बरगद, नीम), हरिशंकरी (पीपल, बरगद, पाकड़), पंचवटी (पीपल, बरगद, अशोक, बेल, जामुन) की स्थापना करें।
- नदियों को वृक्षों की हरी चूनर चढ़ायें, तटों पर औषधीय, धार्मिक एवं पर्यावरण महत्त्व के पौधे लगायें ।
- पहाड़ियों, टेकरियों को गोद लेकर हरा-भरा बनायें।

सिंचाई, सुरक्षा :- मात्र पौधा लगाने को ही इतिश्री न समझा जाये। इनमें खाद-पानी देने तथा वृक्ष के रूप में विकसित होने तक इनकी समुचित देख-रेख की जाये। देख-रेख, सुरक्षा एवं परिपोषण की व्यवस्था न बन सकी, तो श्रम का अधिकांश भाग सरकारी प्रयासों की भाँति निरर्थक चला जायेगा और अन्ततः असफलता ही हाथ लगेगी। प्रारंभ में गर्मी के दिनों में सिंचाई की एक-दो वर्ष आवश्यकता पड़ती है, फिर तो उनकी जड़ें गहरी चली जाती हैं और वे स्वावलम्बी हो जाते हैं।

- वृक्ष जन-जन से लगवायें। पालन-पोषण की जिम्मेदारी युवा मंडल सँभाले। पास के मुहल्ले, कस्बे और गाँव के किशोरों, युवक-युवतियों तथा महिला-पुरुषों के पाँच-पाँच के समूह बनाकर उन्हें भी यह जिम्मेदारी दी जा सकती है।
- जहाँ पालन-पोषण का प्रबंध न हो, वहाँ वर्षा ऋतु में पौध रोपण की व्यवस्था बनायें व ऐसे पौधों का चयन करें, जिन्हें बहुत अधिक देख-रेख की जरूरत न पड़ती हो। ऐसे स्थान के लिये किसी माली अथवा मजदूर को नियुक्त भी किया जा सकता है। उसके पारिश्रमिक की व्यवस्था किसी धनी व्यक्ति द्वारा अथवा गाँव, मोहल्ले व सोसायटी द्वारा सामूहिक रूप से चंदा कर बनाई जा सकती है।
- जल वृक्ष को अधिक दिन तक लाभ पहुँचाये, इसके लिए जरूरी है कि थाँवला बनाकर सिंचाई की जाय। थाँवला सूखते ही इसके ऊपर की सतह में पतली गुड़ाई कर दी जाये और हो सके तो यहाँ घास-पत्ती आदि फैला दी जाये। इससे थाँवले के नीचे की मिट्टी का पानी उड़ना बन्द हो जाता है।
- जल भावनाओं का सर्वश्रेष्ठ वाहक है। अतः व्रत रहकर, पवित्र होकर दिव्य आत्माओं व वृक्ष को जल पिलाने की भावना से जल देने का महत्त्व सामान्य जलदान से कई गुना अधिक लाभदायक है।

पौधों, वृक्षों की रक्षा के लिए अधिक पानी की जरूरत नहीं होती। केवल उनकी जड़ों के आसपास मिट्टी में नमी बनी रहे, इतना ही पर्याप्त है। इसके लिए ड्रिप पद्धति से सिंचाई करने से थोड़े पानी से भी उन्हें जीवित रखा जा सकता है। व्यवस्था के सूत्र इस प्रकार हैं।

- जहाँ सामूहिक सघन वृक्षारोपण किया जाय, वहाँ भावनाशील साधकों के सहयोग से विधिवत् ड्रिप पाइप लाइन डालकर व्यवस्था बनाई जा सकती है। इसके अभाव में कुछ सस्ते व्यावहारिक प्रयोग इस प्रकार हैं।
- पौधे-वृक्ष की जड़ के पास पैंदा कटी हुई पानी की बोतल उलटी गाढ़ दी जाय अथवा प्लास्टिक, टिन, मिट्टी के पुराने बर्तनों के पैंदे में छोटा छेद करके उन्हें जड़ के पास गाढ़ दिया जाय, ऊपर मुँह खुला रखें। उसमें एक बार पानी भर देने से लगभग एक सप्ताह तक जड़ों में नमी बनी रहती है।

बीज आरोपण अभियान :- दुर्गम स्थानों, वनों, टेकरियों पर, जहाँ पौधों के आरोपण की व्यवस्था न बन सके वहाँ बीजों के आरोपण का क्रम सहजता से अपनाया जा सकता है। इस हेतु उपयोगी सूत्र इस प्रकार हैं :-

जिस क्षेत्र में जो वृक्ष सहजता से उपलब्ध हो सकते हैं, वहाँ के लिए उनके बीज पर्याप्त मात्रा में एकत्रित कर लिये जायें। जैसे नीम, इमली, जामुन, बड़, पीपल, बेर, अमरूद, सीताफल आदि। एक थैली में बीज, कम्पोस्ट खाद एवं एक खुरपी लेकर स्वयंसेवक निकलें। उपयुक्त स्थानों पर खुरपी से छोटा गड्ढा करके उसमें बीज एवं खाद डालकर सादा मिट्टी डाल दें। यह कार्य वर्षा ऋतु में एक-दो अच्छी बारिश हो जाने पर सहज ही किया जा सकता है।

योग दिवस के संदर्भ में कुछ निवेदन

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) के लिए गत वर्ष की तरह भारत सरकार की ओर से 'न्यूनतम साझा कार्यक्रम (मिनिमम कॉमन प्रोग्राम)' की रूपरेखा जारी की जा चुकी है। उसे प्रशासनिक स्तर पर सीधे तथा विभिन्न प्रभावी संगठनों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया जा रहा है। इस संदर्भ में शांतिकुंज में देश के लगभग सभी प्रान्तों तथा नेपाल के प्रतिनिधियों का एक प्रेरणा प्रशिक्षण सत्र 29 से 31 मई की तिथियों में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। उक्त सत्र में जिज्ञासा-समाधान के क्रम में जो बातें उभरीं, उनमें से सभी के लिए आवश्यक प्रश्नों का समाधान यहाँ दिया जा रहा है। परिजन इन्हें समझकर विवेकपूर्वक अपने कार्यक्रमों को अधिक प्रभावशाली बना सकते हैं।

ॐ का उच्चारण : निर्धारित क्रम में 'ॐ' के उच्चारण पर समाज के कुछ व्यक्ति एतराज़ प्रकट करते हैं। उन्हें कुछ इस प्रकार समझाया जा सकता है।

ॐ का उच्चारण, गुंजार करने से जैसी ध्वनि उभरती है, वैसी ही ध्वनि इस ब्रह्माण्ड में निरंतर गुंजरित हो रही है। नासा (NASA) के वैज्ञानिकों ने भी अपने शोध प्रयोगों के आधार पर इस तथ्य की पुष्टि की है। इस सर्वव्यापी ध्वनि को सर्वव्यापी परमात्मा की प्रतीक 'नादब्रह्म या शब्द ब्रह्म' कहा गया है। गहरी श्वास खींचकर कंठ से कोई भी लम्बी ध्वनि निकाली जाय तो उसका स्वरूप भी इसी से मिलता-जुलता बन जाता है। इस प्रकार की ध्वनि कंठ से पैदा करने से मन सहज ही एकाग्र होता है। जिन्हें 'ॐ' से परहेज़ हो, वे इसके स्थान पर 'अल्लाऽऽऽह', 'गॉऽऽऽड', 'आमीऽऽऽन' जैसे उच्चारण भी कर सकते हैं।

समारोह का स्वरूप :- भारत सरकार द्वारा जारी रूपरेखा के अनुसार, हर जगह निर्धारित समय पर एक साथ सामूहिक योग साधना के कार्यक्रम किए जाने हैं। यह न्यूनतम साझा कार्यक्रम है, जिसे सब जगह किया-कराया जाना है। विभिन्न संगठन इसके आगे-पीछे अन्य जनउपयोगी सुगम योग व्यायाम जोड़ सकते हैं। योग दिवस पर जन-जन को योग के दर्शन और प्रयोग से जोड़ा जाना है। इसके लिए न्यूनतम कार्यक्रम तक ही सीमित रहना जरूरी नहीं है। प्रभात फेरियाँ, रैलियाँ, सभी धर्म-सम्प्रदायों द्वारा योग के पक्ष में उद्बोधन जैसे कार्यक्रम भी जोड़े जा सकते हैं। शांतिकुंज में इस निमित्त 19, 20, 21 तीन दिन विभिन्न कार्यक्रमों की शृंखला चलाई जाने वाली है। अन्य केन्द्र एवं अन्य संगठन भी अपने ढंग से इस प्रकार के उपयोगी कार्यक्रम चला सकते हैं।

व्यायाम में उपासना का भाव :- ऋषियों ने शारीरिक व्यायाम के साथ उपासना का भाव जोड़ने के अनेक प्रयोग किये हैं। उपासना के समय आसन विशेष में बैठना भी इसी शुभ प्रयोग का एक अंग है। इसी क्रम में सूर्य नमस्कार की मुद्राओं के साथ सूर्य के विभिन्न नाम या प्रज्ञायोग व्यायाम की मुद्राओं के साथ गायत्री महामंत्र के अक्षर बोलने का क्रम बनाया गया है। जिन्हें उक्त उच्चारणों में परहेज हो, वे परमात्मा के विभिन्न गुणों को अपनी पसंद की भाषा में बोल सकते हैं। उदाहरण रूप में परमात्मा के सोलह विशेषण यहाँ दिये जा रहे हैं, इन्हें हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी में अनुवादित करके बोला जा सकता है।

1-वह प्रभु एक हैं, 2. वह सर्वव्यापी है, 3. वह सर्वज्ञ है, 4-वह सर्व समर्थ है, 5-वही आदि है, 6-वही अंत है, 7-वही स्थूल है, 8-वही सूक्ष्म है, 9-वह दयालु है, 10-वह कृपालु है, 11-वह न्यायकारी है, 12-वह सत्य है, 13- वह चेतन है, 14-वह आनन्दरूप है, 15-हम उसकी शरण गहें, 16-वह हमें सद्गति दें।

जो दूसरों की सेवा करने के लिए उत्साहित और प्रयत्नशील रहते हैं, उन्हें जीवन में ईश्वर के प्रेम और सहयोग की अनुभूति का विशेष आनन्द होता है।

नारी उत्कर्ष का एक प्राणवान प्रयोग-कन्या कौशल शिविर, बदलापुर

मंचासीन आदरणीय डॉ. साहब, श्री पारधी जी, प्रतिष्ठित महानुभाव एवं युग पुरोहित बहिनें

बदलापुर, ठाणे (महाराष्ट्र)

गायत्री परिवार की मुम्बई शाखा द्वारा निकटवर्ती शहर बदलापुर में 10 से 15 मई की तारीखों में 'कन्या कौशल शिविर' आयोजित किया गया। मुम्बई सहित दूर-दूर से आयीं 1000 कन्याओं ने इसमें भाग लिया। शिविर संचालन-प्रशिक्षण श्रीमती रश्मिका बेन पटेल और उनकी टोली ने किया। पाँच दिवसीय कार्यक्रम में आदर्श नारियों की सनातन परम्पराओं को अक्षुण्ण बनाये रखने के प्रशंसनीय प्रयास हुए, प्रेरणा दी गयी। गायत्री साधना, ध्यान, संस्कार, संगीत प्रशिक्षण के साथ मानव में देवत्व का संचार करने वाले सूत्रों का अभ्यास कराया गया।

गायत्री परिवार मुम्बईके प्रमुख श्री मनुभाई पटेल कार्यक्रम के मुख्य आयोजक थे। बदलापुर की समर्पित कार्यकर्त्ता श्रीमती दर्शना बेन दामले व श्री आशीष दामले के गायत्री गार्डन में यह कार्यक्रम आयोजित हुआ। उन्होंने कार्यक्रम स्थल निःशुल्क उपलब्ध कराने के साथ पाँच दिन की भोजन व्यवस्था अपनी तरफ से करायी थी।

शिविर की व्यवस्थाएँ गायत्री परिवार मुम्बई के दिया समूह के कार्यकर्त्ता सर्वश्री रमेशभाई पटेल, डी.के. चौधरी, उपेन्द्र चौबे, डॉ. आर. त्रिपाठी, के.एल. मोदी, मनीष दुबे, डॉ. नीरज गुप्ता, श्रीमती प्रियंका आशीष दामले, रमणीकभाई आथा, मोहनभाई खेतिया, छन्नुलाल यादव आदि ने सँभालीं।

शांतिकुंज से श्री शरद पारधी, श्री योगिराज बल्कि और आद. डॉ. साहब के सहयोगी सर्वश्री सूरज प्रसाद शुक्ल, ओंकार पाटीदार, संतोष सिंह, खिलावन सिन्हा की टोली पहुँची थी।

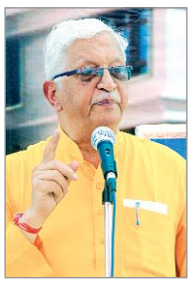

कौशल का सृजनात्मक उपयोग हो

कौशल का विधेयात्मक दृष्टि से परोपकारी उद्देश्यों के साथ उपयोग होना चाहिए, तभी वह व्यक्तिगत जीवन में सुख-शांति का कारण बनता है और समाज के लिए हितकारी होता है। आज संसार में कौशल की कमी नहीं है, लेकिन वही गलती हो रही है जो रावण ने की थी। इसी कारण असुरता बढ़ रही है, मानवता त्रस्त है।

• श्री शरद पारधी जी, कुलपति देसंविवि.

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का विदाई संदेश

शिविर समापन दिवस-15 मई को पधारे युवा पथ प्रदर्शक आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का आगमन और उनके द्वारा प्रेरणा-प्रोत्साहन आकर्षण का मुख्य केन्द्र रहा। विदाई सत्र को संबोधित करते हुए उन्होंने सुसंस्कृत समाज के निर्माण में मातृशक्ति की भूमिका पर विस्तृत चर्चा की।

आदरणीय डॉ. साहब ने नवयुग के निर्माण में साझेदारी के लिए उत्साहित कन्याओं को बड़ा ही मार्मिक विदाई संदेश दिया। उन्होंने कहा कि मुझे यहाँ अहिल्याबाई, दुर्गावती, रानी चेनम्मा, सिस्टर निवेदिता, कृष्णप्रिया, रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगनाएँ बैठी दिखाई दे रही हैं। उन्होंने इन वीरांगनाओं की शौर्यगाथा बतायी और शिविरार्थी कन्याओं से कुछ वैसा ही आदर्श समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का आह्वान किया।

अपना जीवन आदर्श प्रस्तुत करें

आध्यात्मिक जीवन के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए डॉ. साहब ने कहा कि आप जिस वय में हैं, वह अत्यंत संवेदनशील होती है। यही उम्र उत्थान या पतन का मार्ग निश्चित करती है। साधना से जाग्रत् विवेक और परिपक्व व्यक्तित्व इस उम्र के क्षणिक आकर्षणों से बचाता है। जीवन साधना के पथ पर चलते हुए अपने व्यक्तित्व को इतना चमकदार बना लीजिए कि ससुराल में जाकर सबको अपना बना सको।

जीवन उत्कर्ष के चार सूत्र

आदरणीय डॉ. साहब ने कन्याओं को जीवन के उत्कर्ष के लिए चार सूत्रों का सतत अभ्यास करने की प्रेरणा दी। ये सूत्र हैं-1. अपनी कार्यक्षमता का सतत विकास 2. सद्गुणों की साधना से व्यक्तित्व का परिष्कार, 3.व्यवस्था बुद्धि के विकास से अपनी प्रतिभा का सुनियोजन और 4.नेतृत्व कौशल के विकास से क्रमशः बड़े उत्तरदायित्वों का वरण।

मुझे यहाँ अहिल्याबाई, दुर्गावती, रानी चेनम्मा, सिस्टर निवेदिता, कृष्णप्रिया, रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगनाएँ बैठी दिखाई दे रही हैं।

• आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

कन्या कौशल शिविर की झलकियाँ

- पीला कुर्ता, सफेद पायजामा और कंधे पर सफेद दुपट्टा वाली एक जैसी वेशभूषा से पूरा वातावरण अनुशासित नजर आता था। कन्याओं के चेहरों पर अलौकिक दिव्यता और उत्साह; ऐसा लग रहा था जैसे आदर्श नारियों की सनातन परम्परा को अखण्डित रखते हुए साक्षात युगशक्ति गायत्री का अवतरण हुआ हो।
- इचलकरंजी जिला कोल्हापुर से 20, पटना (बिहार) से 25 और वडोदरा (गुजरात) 25 कन्याएँ इस शिविर में भाग लेने आयी थीं।
- नालासोपारा, जिला पालघर से आयी 15 मुस्लिम कन्याओं ने शिविर में भाग लिया। उन्होंने सायंकालीन आरती के बाद उर्दू में प्रार्थना भी की। शिविर में भाग लेकर वे बहुत आनन्दित थीं। उन्होंने कहा कि ऐसे शिविर बार-बार होने चाहिए।
- गायत्री परिवार मुम्बई द्वारा प्रकाशित पुस्तिका 'गृहस्थ दिशाधारा' का आदरणीय डॉ. साहब ने विमोचन किया। सभी शिविरार्थियों को यह पुस्तक उपहार स्वरूप प्रदान की गयी।
- प्रशिक्षित कन्याएँ शिविर में प्राप्त विद्या को जीवन में धारण करते हुए गुरुसत्ता के अनुदान-वरदानों की अधिकारी बनें, समाज निर्माण में महती भूमिका निभाते हुए सफल जीवन जीने का गौरव और संतोष अनुभव कर सकें, अपने गृहस्थ जीवन में स्वर्ग की सृष्टि कर सकें, ऐसे मंगलकामनायुक्त आशीष आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं अन्य वरिष्ठ महानुभावों ने शिविरार्थी कन्याओं पर पुष्पवर्षा करते हुए दिये।

गायत्री चेतना केन्द्र, मुम्बई के निर्माण के लिए आयोजित हुआ संकल्प समारोह

आदरणीय डॉ. साहब ने कहा-

कार्यकर्त्ताओं के प्राण और तप से बनेगा गायत्री चेतना केन्द्र

साधना-सक्रियता के पाँच सूत्र बताये

सानपाड़ा, नवी मुंबई में बन रहा है गायत्री चेतना केन्द्र

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी संकल्प समारोह में बृहन्मुंबई के कार्यकर्त्ताओं को संबोधित करते हुए

गुरुदेव का लक्ष्य और आश्वासन

कन्या कौशल शिविर, बदलापुर के समापन दिवस-15 मई के दिन आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी की मुख्य उपस्थिति में मुम्बई में निर्माणाधीन गायत्री चेतना केन्द्र के संकल्प समारोह के रूप में विशाल कार्यकर्त्ता सम्मेलन हुआ। इस अवसर पर उन्होंने कहा-

गायत्री चेतना केन्द्र, सानपाड़ा का निर्माण एक बड़ा कार्य है। लेकिन मैं जब भी मुंबई आता हूँ तब यहाँ के कार्यकर्त्ताओं का हँसता-मुस्कराता हुआ चेहरा देखकर अनुभव करता हूँ कि इनके लिए कोई भी चुनौती असंभव नहीं है।

परम पूज्य गुरुदेव के लक्ष्य और आश्वासन का हमें सदैव स्मरण रहना चाहिए। गुरुदेव का स्पष्ट आश्वासन है कि जिसने कार्य का संकल्प जगाया है, वह उसे पूरा करने के साधन भी जुटायेगा। हम तो बस अपना लक्ष्य ध्यान में रखें अपनी सक्रियता में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहने दें।

गुरुदेव के हर कार्य का उद्देश्य है जनमानस का परिष्कार। इसके लिए हमें समाज के समक्ष अपना आदर्श प्रस्तुत करना होगा।

योग्यता संवर्धन के पाँच सूत्र

सुसंस्कारिता : युग निर्माण आन्दोलन से जुड़ने की और गुरुदेव के अंग-अवयव बनने की पात्रता हमें अपने श्रेष्ठ संस्कारों के आधार पर ही मिली है। अपने व्यक्तित्व को संस्कारवान बनाने की साधना जिस अनुपात में हम करते रहेंगे, उसी अनुपात में गुरुदेव के अनुदान-वरदान और सफलता प्राप्त करते जायेंगे।

संवेदनशीलता : मनुष्य की संवेदनशीलता ही उसे परमार्थ के लिए प्रेरित करती है। संवेदनशीलता अपनेपन के विस्तार से उपजती है।

सक्रियता : संवेदनशीलता केवल विचार न रहे, यह सक्रियता में बदल जाये तो नरेन्द्रनाथ विवेकानन्द और मोरबी के मूलशंकर दयानंद बन जाते हैं। तब मीरा कृष्ण की भक्ति में लीन होकर अपने इष्ट के साथ एकाकार हो जाती है।

प्रामाणिकता : देने वालों की कहीं कमी नहीं, सही मायनों में लेने वाले नहीं मिलते। यह पात्रता व्यक्ति की प्रामाणिकता पर आधारित है। जो कहा सो कर दिखाने वाले लोगों को समाज का भरपूर सहयोग मिलता है और भगवान का अनुदान भी ऐसे ही लोगों के लिए सुरक्षित होता है।

संगठनशीलता : जैसे छोटे-छोटे रेशे एक-दूसरे के साथ गुँथकर मजबूत रस्सा बना देते हैं, उसी प्रकार हर कार्यकर्त्ता को एक-दूसरे के दोष-वैरभाव को भुलाकर संगठित हो जाना चाहिए। इस संगठन में ही वह बल है जो बड़े से बड़े कार्य को पूरा कर सकता है।

गायत्री चेतना केन्द्र, सानपाड़ा के निर्माण के लिए मुंबई के कार्यकर्त्ताओं को यह पाँचों सूत्र अपनाते रहना चाहिए।

गायत्री चेतना केन्द्र, सानपाड़ा का प्रारूप

गायत्री चेतना केन्द्र, मुंबई का भवन पाँच मंजिला होगा। इसके **भूमिगत तल** के शांत वातावरण में दिव्य साधना केन्द्र बनाया जायेगा। **प्रथम तल** पर आदिशक्ति माँ गायत्री मंदिर व सत्संग भवन होंगे। **द्वितीय तल** पर कार्यालय, पुस्तकालय, औषधालय, साहित्य केन्द्र होंगे। **तृतीय तल** पर परिव्राजक एवं अतिथियों के आवास की व्यवस्था होगी। **चतुर्थ तल** पर माँ भगवती अन्नक्षेत्र के निर्माण की योजना है।

साधनायुक्त सहयोग जुटाने की दो योजनाएँ

प्रज्ञा व्रतधारी योजना

गायत्री चेतना केन्द्र, मुम्बई के निर्माण का आधार भी साधना हो, जन-जन की इसमें भागीदारी हो, आदरणीय डॉ. साहब ने ऐसा आह्वान अपने उद्बोधन में किया। इसके लिए प्रज्ञाव्रतधारी योजना बतायी। ऐसे 3000 प्रज्ञा व्रतधारी साधक तैयार करने का लक्ष्य रखा गया है, जो-

- चेतना केन्द्र निर्माण के लिए नित्य अतिरिक्त जप करेंगे।
- एक समय भोजन त्यागेंगे और उसकी बचत राशि 24 रुपये प्रतिदिन चेतना केन्द्र निर्माण के लिए अर्पित करेंगे।

संकल्प सिद्धि दीपयज्ञ

केन्द्र के निर्माण में अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए 6 स्थानों पर 2400 दीपों वाले संकल्प सिद्धि दीपयज्ञों के आयोजन की योजना बनी है। 1. निर्माणाधीन चेतना केन्द्र, सानपाड़ा 2. गायत्री प्रज्ञापीठ भिवंडी 3.गायत्री प्रज्ञा केन्द्र ठाणे, 4.गायत्री शक्तिपीठ नालासोपारा 5. प्रज्ञा मण्डल दहिसर और 6. गायत्री परिवार मालाड द्वारा यह दीपयज्ञ आयोजित किये जायेंगे।

नासमझ लोग ही दूसरों की निंदा करते हैं। समझदार व्यक्ति अच्छे-बुरे सभी से कुछ न कुछ सीखने का प्रयास करते हैं।

मराठवाड़ा में खण्डोबा नदी को पुनर्जीवित कर रहा है गायत्री परिवार

औरंगाबाद शाखा द्वारा टैंकरों से किया जा रहा जल वितरण

औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

मराठवाड़ा क्षेत्र इन दिनों अब तक के इतिहास के सबसे बड़े सूखे की चपेट में है। वहाँ लगातार तीन वर्षों से अकाल पड़ रहा है, वह भी एक से बढ़कर एक। लगभग 600 लोग सूखे के दुष्प्रभावों को न झेल पाने के कारण आत्महत्या कर चुके हैं।

- कई गाँवों में वितरित किया जा चुका है 700 टैंकर पानी
- घर-घर जाकर जल संरक्षण के लिए लोगों को जागरूक कर रहे हैं कार्यकर्त्ता

अखिल विश्व गायत्री परिवार की औरंगाबाद शाखा ने हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी सूखा पीड़ितों की सेवा करते हुए बड़े प्रभावशाली कदम उठाये हैं। इस शाखा ने 5000 लीटर जल क्षमता वाले 700 टेंकर सर्वाधिक सूखा प्रभावित गाँव-मालेगाँव, आसेगाँव, गोकुलवाड़ी आदि में पहुँचाये हैं। यह सेवा अभी भी निरंतर जारी है। प्रत्येक टैंकर की कीमत 800 रुपये होती है।

खण्डोबा का पुनर्जीवन

- 3200 मीटर लम्बाई पर की गयी 44500 घनमीटर खुदाई
- 20 लाख के सरकारी काम को मात्र चार लाख रुपये में कराया
- औरंगाबाद शाखा की सक्रियता ने ही दिलाया है निर्मल गाँव का पुरस्कार

सूखे के स्थायी समाधान के रूप में गायत्री परिवार ने खुलताबाद तहसील के गाँव गोलेगाँव की खंडोबा नदी को पुनर्जीवित करने का संकल्प लिया है। सरपंच श्री सुभाष जोशी ने बताया कि गाँववासी पिछले कई माह से प्रशासन से इस नदी को पुनर्जीवित करने की माँग कर रहे हैं, लेकिन अधिकारियों पर उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। ऐसी स्थिति में इसे पुनर्जीवित करने का बीड़ा गायत्री परिवार की औरंगाबाद शाखा ने उठाया है।

शराब बंदी संकल्प यात्रा

ज्ञापन सौंपकर मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री से की राज्य में पूर्ण शराब बंदी की माँग

शराबी की बुरी लत का दुष्परिणाम क्यों भुगते उसका परिवार?

कसरावद की गलियों से गुजरती गायत्री परिवार की शराब बंदी संकल्प यात्रा

कसरावद, खरगोन (म.प्र.)

पूरा परिवार चिलचिलाती धूप और हाड़ कँपाती ठंड में दो वख्त की रोटी जुटाने के लिए कठोर श्रम करे और नशेड़ी उसे अपनी बुरी लत के चलते मिनिटों में फूँक दे। परिवार सदा अशिक्षा, गरीबी, कुपोषण, घरेलू हिंसा, प्रताड़ना का शिकार बनता रहे, क्यों? आखिर इस शराब ने किसका भला किया है?

ऐसे ही ज्वलंत प्रश्नों का समाधान तलाशते हुए अखिल विश्व गायत्री परिवार की बलकवाड़ा शाखा की पहल पर तहसील मुख्यालय कसरावद में दिनांक 18 मई को विशाल व्यसनमुक्ति रैली निकाली गयी। प्रदेश को नशामुक्त कराने की इस संकल्प यात्रा में 46 डिग्री के भीषण ताप को झेलते हुए शामिल लगभग 1000 लोगों ने अपने जोशीले उद्घोषों के साथ पूरे समाज का ध्यान इस ओर आकर्षित किया। रैली दोपहर 10 बजे से 12 बजे तक पूरे नगर में घूमी। अंत में एसडीएम श्री पीएल देवड़ा को मुख्यमंत्री जी के नाम ज्ञापन सौंपा, जिसमें गुजरात और बिहार की तरह मध्य प्रदेश में भी पूरी तरह शराब बंदी की माँग की गयी थी।

बलकवाड़ा शाखा ने वर्ष 2012 में अपने निकट चिचलाय गाँव में नयी शराब फैक्ट्री लगाने के प्रशासन के प्रस्ताव का भी जोरदार विरोध किया था, जिसके चलते स्वयं मुख्यमंत्री जी को इस फैक्ट्री के निर्माण पर रोक लगानी पड़ी थी।

विशिष्ट झलकियाँ

- कसरावद तहसील में गायत्री परिवार की अनेक शाखाओं के प्रतिनिधि रैली में शामिल हुए।
- कई धार्मिक, सामाजिक संगठनों का पूरा समर्थन, सहयोग मिला, सहभागिता रही।
- पाटीदार समाज की जिला अध्यक्ष भगवतीबाई ने भी अपने समाज की ओर से मुख्यमंत्री जी के नाम ज्ञापन दिया।
- एसडीएम सहित तहसीलदार स्वाती मिश्रा, नायब तहसीलदार भागीरथ वाकला भी रैली में शामिल हुए।
- बलकवाड़ा से आये मजदूर वर्ग के लगभग 100 लोगों ने एसडीएम के समक्ष नशामुक्ति के संकल्प लिये।
- सिंहस्थ महाकुंभ में पधारे संतों ने गायत्री परिवार की इस पहल को सराहा।
- अभियान को मीडिया और सोशल मीडिया का भी भरपूर समर्थन मिला।

इंद्रायणी नदी को साफ कर रहे हैं पुणे के युवा

इन्द्रायणी नदी और राम नदी पर नियमित रूप से श्रमदान करने वाले दिया, पुणे के युवा

दिया, पुणे (महाराष्ट्र)

अखिल विश्व गायत्री परिवार के जल स्रोतों की स्वच्छता के राष्ट्रीय अभियान 'निर्मल गंगा जन अभियान' के अन्तर्गत दिया, पुणे के युवा कार्यकर्त्ताओं ने नगर की रामनदी और इन्द्रायणी नदी की सफाई का नियमित अभियान चला रखा है। नैष्ठिक परिजन इसके अंतर्गत सामूहिक श्रमदान करते हैं। औसतन 500 कामकाजी घंटे हर माह इस कार्य के लिए समर्पित किये जाते हैं। युवाओं ने अपने इस अभियान में टनों मलबा, झाड़ियाँ और कचरा हटाया है। परिजनों का मानना है कि इससे घाटों की जल धारण क्षमता बढ़ रही है और जल का अवरोध हट जाने से आने वाले दिनों में बाढ़ का खतरा भी कम होगा।

सफाई से अवरोध हटेंगे बाढ़ का खतरा होगा कम

दिया, मुम्बई ने आयोजित किया रक्तदान शिविर

उल्हास नगर, ठाणे (महाराष्ट्र)

दिया, मुम्बई ने श्रमिक दिवस (1 मई) के दिन मोतीराम प्राइड को-ऑपरेटिव हा. सोसाईटी उल्हास नगर में रक्तदान शिविर का आयोजन किया। इसे उल्हास नगर के सेण्ट्रल हॉस्पिटल के रक्त बैंक की 7 सदस्यीय टीम ने रक्तदान संपन्न कराया।

रक्तदान के लिये आये 70 व्यक्तियों में से 46 व्यक्तियों ने रक्त दान किया। इनमें युवा क्रिकेट खिलाड़ी भी शामिल थे। प्रथम बार रक्तदान करने वालों के चेहरों पर किये गये परोपकार से मिली प्रसन्नता अलग ही दिखाई देती थी। रक्तदाता एवं अन्य सहयोगियों को हारिये न हिम्मत पुस्तिका तथा तुलसी के पौधे एवं प्रसाद देकर सम्मानित किया गया।

दिया के सदस्यों ने इस शिविर की सफलता के लिए अथक श्रम किया। उन्होंने सोसाईटी में घर-घर जाकर तथा निकट के व्यक्तियों को रक्तदान के लिये प्रेरित किया।

प्रमाण पत्र एवं पौधे देकर रक्तदाताओं का किया सम्मान

मोती तालाब, बालाघाट की सफाई

कलेक्टर से मिला सहयोग बैनगंगा पर भी होगा श्रमदान

गायत्री परिवार के भाई-बहिन मोती तालाब पर श्रमदान करते हुए

बालाघाट (मध्य प्रदेश)

गायत्री परिवार बालाघाट ने 26 मई को जल संरक्षण एवं पर्यावरण संवर्धन के लिए जनजागरण रैली निकाली, तत्पश्चात् नगर के मोती तालाब पर सामूहिक श्रमदान किया। श्रमदान के अवसर पर जिला कलेक्टर श्री भरत यादव, पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष श्री रमेश रंगलानी एवं वर्तमान अध्यक्ष श्री अनिल धुवारे पूरे समय उपस्थित रहे।

श्रमदान से पूर्व प्रातः साढे पाँच बजे मोती तालाब तक जनजागरण रैली निकाली गयी। तत्पश्चात् राजा भोज की प्रतिमा के समक्ष 10 मिनट 'सबके लिए सद्बुद्धि, सबके लिए उज्ज्वल भविष्य' की सामूहिक प्रार्थना की गयी। प्रार्थना के बाद सामूहिक श्रमदान आरंभ हुआ, जिसमें गायत्री परिवार के 110 भाई-बहिनों ने भाग लिया। प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री महेश खजांची एवं डॉ. चारुदत्त जोशी के साथ बच्चे-बूढ़े सभी श्रमदान में जुटे, तालाब से बड़ी मात्रा में कचरा, काई, जलकुंभी निकाली गयी।

श्रमदान से प्रभावित नगरपालिका के कर्मचारियों ने भी श्रमदान में बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। कलेक्टर महोदय सभी का उत्साहवर्धन करते रहे। 29 मई को बैनगंगा नदी पर इसी तरह स्वच्छता अभियान चलाने का निर्णय लिया गया। कलेक्टर महोदय ने धुवारे जी को इसके लिए समस्त आवश्यक उपकरण उपलब्ध कराने के निर्देश दिये।

विद्यार्थियों को साइकिलें दीं

वसई, पालघर (महाराष्ट्र)

गायत्री परिवार की वसई शाखा ने 30 अप्रैल को कुछ योग्य एवं जरूरतमंद विद्यार्थियों को निःशुल्क साईकिल प्रदान कीं। श्री हरित पंचाल के अनुसार यह साईकिलें उन होनहार जरूरतमंद विद्यार्थियों को भेंट की गयी हैं, जो गरीब परिवार के हैं और कई कि.मी. दूर पढ़ने स्कूल जाती हैं।

जल संरक्षण के लिए जनजागरण

बदायूँ (उत्तर प्रदेश)

गायत्री शक्तिपीठ बदायूँ में जल की बर्बादी रोकने और जल संरक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें श्री बी. ज्ञानेंद्र तथा श्री अनिल कुमार राठौड़ ने सूखे के कारण मनुष्य ही नहीं, प्यास बुझाने के लिए भटकते पशु-पक्षियों के प्रति गहरी संवेदना प्रकट की। उन्होंने कहा कि हमें जल के मूल्य को समझ कर उसकी एक-एक बूँद को बचाने का प्रयास करने होंगे। श्री सुखपाल शर्मा, श्री सुरेन्द्र नाथ शर्मा तथा श्री शैलेन्द्र यादव ने जल को बचाने के साथ उसे भूगर्भ में उतारने और जल स्तर को उठाने के उपायों की चर्चा की।

9 वर्षों में 27 वाँ शिविर

166 यूनिट रक्तदान हुआ

साकची, जमशेदपुर (झारखंड)

गायत्री परिवार के युवा प्रकोष्ठ ने 15 मई को रक्तदान शिविर का आयोजन किया। नवयुग दल के सदस्यों ने इस कार्य के प्रति विशेष उत्साह दिखाया, कुल 166 यूनिट रक्त संग्रह किया गया।

जमशेदपुर में वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री प्रभाकर राव की माताजी की पुण्य स्मृति में त्रैमासिक रक्तदान शिविर की यह शृंखला पिछले 9 वर्षों से चल रही है। 15 मई का यह शिविर शृंखला का 27वाँ कार्यक्रम था।

कमजोर व्यक्ति ही कठिन परिस्थितियों में दुःख का अनुभव करते हैं। बलवान तो उन्हें चुनौती मानकर उन पर विजय प्राप्त करते हुए और अधिक बलशाली हो जाते हैं।

आदरणीय डॉ. साहब के प्रवास से जॉनसार बाबर क्षेत्र में आयी विकास की लहर

उद्पाल्टा, देहरादून (उत्तराखण्ड)

पर्यटकों का सहज ही मन मोह लेने एवं मन में अलौकिक दिव्यता का संचार करने वाले देवभूमि उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्र की वास्तविक कहानी कुछ और ही है। पहाड़ों पर रोजगार के अभाव में लोग पलायन कर रहे हैं। खेती के लिए जमीन तलाशने के क्रम में वन कटते और घटते जा रहे हैं। जल-संकट भी खड़ा हो गया है। गाँव-गाँव नशे के शिकार हैं।

शांतिकुंज ने इन गाँवों को नवजीवन प्रदान करने के लिए अपनी आदर्श ग्राम योजना के अंतर्गत देहरादून जिले में चकराता प्रखण्ड के उद्पाल्टा गाँव से एक नयी पहल की। इसी गाँव के निवासी गायत्री परिवार के प्राणवान कार्यकर्त्ता डॉ. गजेन्द्र सिंह राय के सहयोग से सन् 2004 में कार्य आरम्भ हुआ। सबसे पहले वृक्षारोपण और उसके बाद शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन, नशा उन्मूलन की चरणबद्ध योजनाएँ चलायीं। आज इस गाँव की प्रगति से पूरा जॉनसार बाबर क्षेत्र प्रभावित है।

क्षेत्र में परिवर्तन की उमंगों को उस समय पंख लग गये जब 4 मई को अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी उद्पाल्टा पहुँचे। 20-25 गाँवों के लोग उनके स्वागत के लिए उपस्थित थे। वे गाँव के लोगों में आये बदलाव और उत्साह को देखकर वे स्वयं बहुत प्रभावित हुए।

उद्पाल्टा पहुँचने पर आदरणीय डॉ. प्रणव जी का भव्य स्वागत और सभा में उपस्थित 20-25 गाँवों के लोग

पारम्परिक ढंग से स्वागत हुआ

उत्पाल्टा पहुँचने पर आदरणीय डॉ. साहब का परम्परागत ढंग से स्वागत हुआ। गाँव के पंचायत भवन में एक सभा आयोजित हुई। क्षेत्र के राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार श्री नंदलाल भारती की टीम ने भी लोकनृत्य प्रस्तुत किये।

आदरणीय डॉ. साहब ने शांतिकुंज के सहयोग से 350 गाँवों वाले पूरे जॉनसार बाबर क्षेत्र के आदर्श विकास के लिए तरह-तरह की योजनाएँ चलाने का आश्वासन दिया। अपने संक्षिप्त उद्बोधन में उन्होंने कुटीर उद्योगों के प्रशिक्षण और विकास, क्षेत्र में उपलब्ध बहुमूल्य जड़ी-बूटियों के संरक्षण, सुविचार-संस्कार संवर्धन के लिए नियमित स्वाध्याय-सत्संग, हरीतिमा संवर्धन, जीवन साधना प्रशिक्षण जैसी कई योजनाओं को इस क्षेत्र में गति देने का आश्वासन दिया।

हर कार्यकर्त्ता से व्यक्तिगत वार्ता

5500 फीट की ऊँचाई पर बसा उद्पाल्टा गाँव जॉनसार बाबर के नाम से जाने जाने वाले क्षेत्र का एक गाँव है। आदरणीय डॉ. साहब इस गाँव की प्रगति व योजनाओं से तो 12 वर्ष पहले से ही जुड़े रहे, लेकिन यहाँ वह पहली बार ही आये थे। उन्होंने गाँव की आदर्शोन्मुख सक्रियता का बारीकी से निरीक्षण किया और इस कार्य में जुटे हर परिजन से स्वयं बातचीत की। देखा कि लोगों में केवल अपने को ही नहीं, पूरे क्षेत्र को बदलकर युग निर्माण आन्दोलन का आदर्श प्रस्तुत करने का उत्साह है।

गाँव की उत्कृष्ट परम्परा

उत्पाल्टा गाँव में आपसी एकता और भाईचारे का एक आदर्श दिखाई देता है। उत्पाल्टा के आदर्श विकास कार्यों के प्रमुख समन्वयक श्री विष्णु मित्तल ने बताया कि वहाँ विवाह एक व्यक्ति का कार्य नहीं, पूरे गाँव की जिम्मेदारी है। विवाह के अवसर पर पूरे गाँव से सहयोग जाता है और पूरे गाँव की भोजन व्यवस्था भी एक ही स्थान पर होती है।

गाँव में कोई घर बनाना हो या अन्य कार्य करना हो तो हर घर का एक व्यक्ति उसमें श्रमदान के लिए अनिवार्य रूप से शामिल होता है।

इसी प्रकार गाँव के हर कार्य मिल-जुलकर किये जाते हैं।

प्रशिक्षण केन्द्र का भूमिपूजन

आदरणीय डॉ. साहब ने अपने उद्बोधन में कुटीर उद्योगों के प्रशिक्षण और विकास के लिए गाँववासियों से भूमि उपलब्ध कराने का आह्वान किया था। इसी गाँव के निवासी गायत्री परिवार के नैष्ठिक कार्यकर्त्ता और उत्पाल्टा के आदर्श विकास के सूत्रधार डॉ. जी.एस. राय ने तत्काल गाँव के अंदर की निजी भूमि इस केन्द्र के निर्माण के लिए समर्पित कर दी। आदरणीय डॉ. साहब ने उसका भूमिपूजन भी कर दिया।

गायत्री परिवार की सक्रियता के 12 वर्ष

गाँव की पहाड़ियों पर किया गया वृक्षारोपण

शांतिकुंज द्वारा उद्पाल्टा के आदर्श ग्राम विकास का अभियान सन् 2004 में आरम्भ किया गया था। उस वर्ष लगाये 500 पेड़ आज 10-12 फीट ऊँचे हो गये हैं। इसके बाद भी कई बार वृक्षारोपण अभियान चलाया गया। 7000 से अधिक वृक्ष इस क्षेत्र में रोपे गये हैं।

- गाँव में कई बार निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाये गये।
- सन् 2010 में गाँव की 10 बच्चियों को शांतिकुंज में बुलाकर जूट से बनी चीजें-बैग, मोबाइल के पर्स, तरह-तरह के सजावटी सामान आदि बनाने का प्रशिक्षण दिया था। इस कार्य के लिए उत्पाल्टा गाँव को 2 मशीनें भी दी थीं।

कुटीर उद्योग चला रही युवतियों से चर्चा

- कार्य बढ़ता गया। आज इस गाँव की 50 युवतियाँ इस कार्य में जुटी हैं, 12 मशीनों पर काम हो रहा है। गाँव में इन युवतियों को 20 से 25 हजार रुपये प्रतिमाह की आमदनी हो जाती है।
- कई गाँववासी शांतिकुंज आकर 9 दिन और एक माह के साधना-प्रशिक्षण सत्र कर चुके हैं और अपने गाँव में यज्ञ आन्दोलन-संस्कार परम्परा के पुनर्जीवन में जुट गये हैं। यह क्रम निरंतर चल रहा है।
- गाँव में बाल संस्कार शाला चल रही है।
- संगीत प्रशिक्षण का क्रम चल रहा है।
- मासिक सामूहिक श्रमदान-स्वच्छता का क्रम चलता है।
- देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थी अपनी विविध योजनाओं के अंतर्गत उद्पाल्टा जाकर गाँव के लोगों को योग, चिकित्सा, स्वावलम्बन, संस्कार, स्वच्छता आदि का प्रशिक्षण देते रहते हैं।

अणु आयुधों के जखीरे पर बैठी सारी दुनिया के विनाश का खतरा तब भी था और आज भी है। आसुरी शक्तियाँ लगातार अपना सिर उठा रही थीं और आज उनका आतंक और भी बढ़ता दिखाई देता है। उन दिनों जब जानकार विद्वान दुनिया पर अस्तित्व मँडराता देख रहे थे तब परम पूज्य गुरुदेव ने स्पष्ट घोषणा की थी कि यह दुनिया नष्ट नहीं होने जा रही, बल्कि और भी बेहतर होने जा रही है।

आज बढ़ते जा रहे आतंक को देखकर लोगों को गुरुदेव की भविष्यवाणी पर संदेह भले ही होता हो, लेकिन जब पाकिस्तान में मानवता की सेवा का आदर्श प्रस्तुत कर रहे श्री अब्दुल सत्तार ईधी जैसे नेक दिल इंसानों की सक्रियता को देखते हैं तो गुरुदेव की भविष्यवाणी पर संदेह सहज ही दूर हो जाता है। गतवर्ष पाकिस्तान की मलाला यूसुफ जई को शांति का नोबल पुरस्कार मिला, तो इस बार श्री अब्दुल सत्तार ईधी का नाम नोबल पुरस्कार के लिए विचाराधीन है। उनके ईधी फाउण्डेशन की गतिविधियों को देखते हैं तो ऐसा लगता है कि पाकिस्तान में भी युग निर्माण की धारा प्रवाहित हो रही है। 'मानव में देवत्व' और 'धरती पर स्वर्ग' के अवतरण के पक्षधर इंसान वहाँ भी पीड़ित मानवता की सेवा करते हुए प्रेम, भाईचारा और शांति का संदेश देते हैं।

पाकिस्तान में भी प्रवाहित युग निर्माणी धारा
ईधी फाउण्डेशन

अनाथ बच्चों को भोजन कराते श्री अब्दुल सत्तार ईधी

भारत का लाल

ईधी दम्पति अनाथ बच्चे को गोद में लिए हुए

श्री अब्दुल सत्तार ईधी सन् 1928 में वर्तमान में भारत के जूनागढ़ जिले के बन्तवा गाँव में जन्मे हैं। श्री ईधी के बेटे फैजल बताते हैं कि उनके अब्बा ने जिन्नाह साहब के वादे पर विश्वास किया और आशा रखी कि नया मुल्क पाकिस्तान एक 'एक वैलफेअर स्टेट' बनेगा। लेकिन वहाँ जाकर जब उनके सपने चकनाचूर हो गये तो उन्होंने स्वयं अपने सपनों में रंग भरना आरंभ कर दिया। उन्होंने 'ईधी फाउंडेशन' की स्थापना की और उसके माध्यम से बेसहारों, बीमारों, अपंगों, अनाथ बच्चों, नशेड़ियों, परिवार से निकाले गये बुजुर्गों, विधवा औरतों की सेवा को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। उनकी इस निःस्वार्थ सेवा ने नोबल फाउण्डेशन के द्वार तक दस्तक दे दी है। उनकी सेवाओं से निःसंदेह लाखों-करोड़ों लोगों को शांति, सद्भाव, सेवा का संदेश मिल रहा होगा और उनका समर्थन भी।

ईधी फाउण्डेशन - मानवता की निःस्वार्थ सेवा का एक आदर्श

- ईधी फाउण्डेशन का मौलिक सेवाकार्य है अनाथ बच्चों का पालन। संगठन ने पाकिस्तान के प्रमुख शहरों के पार्कों में पालने बना रखे हैं, जिनमें कुंवारी माताएँ अपनी अवैध संतान या ऐसे लोग जो अपनी संतान को पाल नहीं सकते, इन पालनों में छोड़ जाते हैं। ऐसे 5700 बच्चों का पालन यह फाउण्डेशन कर रहा है। फाउण्डेशन ने विज्ञापन दे रखा है कि 'नवजात बच्चों को न तो मारें, न ही फैंके, उन्हें पालने के लिए हमें दे दें।'
- ईधी फाउण्डेशन के पास 1800 एम्बुलेंस हैं। कोई भी जरूरतमंद एक फोन कॉल कर इनकी निःशुल्क सेवा ले सकता है।
- देश में 300 सेवा केन्द्र हैं, अकेले कराची में ही 8 अस्पताल हैं जिनमें मधुमेह, आँखों के रोग और कैंसर के रोगियों का निःशुल्क इलाज होता है। कराची में दो ब्लड बैंक संचालित हैं।
- फाउण्डेशन का एक 'लीगल सेल' है जो निर्दोष बंदियों की रिहाई के लिए केस लड़ता है।
- ईधी फाउण्डेशन के 15 'अपना घर' चल रहे हैं। ये घर से भागे या अनाथ, मानसिक रूप से कमजोर बच्चों को आश्रय, परामर्श और रोजगार देते हैं।
- 25 ऐसे केन्द्र हैं जो लावारिस लाशों का अंतिम संस्कार करते हैं।
- यह फाउण्डेशन विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं में सेवा में अग्रणी रहता है। फाउण्डेशन के पास 28 नौकाएँ हैं जो बंदरगाहों या बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के आसपास सेवा के लिए सदैव तैयार रहती हैं।

पाकिस्तान के दुर्दान्त क्षेत्रों में भी चोर, डाकू, लुटेरे ऐसी गाड़ियों को नहीं लूटते, जिन पर ईधी फाउण्डेशन का बोर्ड लगा हो।

आम लोगों से इकट्ठा होता है 150 करोड़ रुपये का चंदा

ईधी फाउण्डेशन का वार्षिक बजट लगभग 150 करोड़ रुपये है। यह धनराशि मध्यम वर्ग के लोग ही जुटाते हैं। जब भी फाउण्डेशन को चंदे की जरूरत होती है तो श्री अब्दुल सत्तार ईधी और उनकी धर्मपत्नी बिल्किस किसी शहर के सार्वजनिक चौराहे पर चादर फैलाकर बैठ जाते हैं। पीछे मात्र एक बैनर होता है-'ईधी फाउण्डेशन के लिए चंदा यहाँ दें।' इस दम्पति की निःस्वार्थ सेवा, प्रामाणिकता और जनमन में समाहित संवेदना का ही प्रभाव है कि वहाँ चंदा देने वालों की लम्बी लाइन लग जाती है।

राजनैतिक सहयोग से परहेज

यह संगठन किसी प्रकार का कोई राजनैतिक चंदा नहीं लेता। पिछले दिनों भारत के प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने ईधी फाउण्डेशन को दस लाख रुपयों की आर्थिक सहायता प्रदान करनी चाही थी, जिसे उन्होंने बड़ी विनम्रता के साथ नकार दिया था।

हर परिस्थिति को ईश्वर का प्रसाद मानते हुए सदैव प्रसन्नचित्त रहना, मुस्कराते रहना अनेक रोगों से बचने और उन्हें दूर करने की अचूक औषधि है।

मन्दिर की घंटियों की झंकार के बीच हुआ उद्घोष 'व्यसन से बचाओ, सृजन में लगाओ'

युवा क्रान्ति वर्ष-2016 के अंतर्गत अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा 31 मई-अंतर्राष्ट्रीय तंबाकू निषेध दिवस एक राष्ट्रीय पर्व 'व्यसन मुक्ति दिवस' के रूप में मनाया गया। देश के नगर-गाँवों में अत्यंत प्रभावशाली हजारों व्यसनमुक्ति रैलियाँ निकाली गयीं, ज्ञापन दिये गये। शांतिकुंज ने ब्रह्ममुहूर्त में ही विशाल रैली निकालकर नशे के दानव के चंगुल में फँसती जा रही युवा पीढ़ी को उससे मुक्त कराने का क्रान्तिकारी संदेश दिया।

31 मई राष्ट्रीय व्यसन मुक्ति दिवस

31 मई, उगते सूरज की किरणें शिव की नगरी हरिद्वार पर पड़ रही थीं। आश्रम और मंदिरों में आरती की वेला थी। घंटियों और ढोल नगाड़ों की आवाजें आ रही थीं। इस दिव्य निनाद के बीच महाकाल के साथी-सहयोगियों के गगनभेदी स्वर उभर रहे थे। 'व्यसन से बचाओ, सृजन में लगाओ', 'नशा नाश की जड़ है भाई, फल इसका अतिशय दुःखदायी' जैसे उद्घोष मानवीय दुर्बुद्धि को सावधान कर रहे थे और देवदूतों के बुलंद हौसले नशे के दानव को ललकार रहे थे।

शांतिकुंज द्वारा निकाली गयी इस रैली में लगभग 700 आश्रमवासी, शिविरार्थियों ने भाग लिया। उनके गगनभेदी उद्घोष आह्वान कर रहे थे धर्मनगरी हरिद्वार के धर्म-संस्कृति के प्रति निष्ठावानों से। यह आह्वान था राष्ट्र की बुनियाद को खोखला कर रहे नशे के दानव को ललकारने के लिए एकजुट होने का। स्वयं अपने जीवन से आदर्श प्रस्तुत करने का। यह समझने का कि नशे का नाश करने में ही शिव की सच्ची भक्ति और राष्ट्र-संस्कृति का कल्याण निहित है।

प्रातः साढ़े पाँच बजे श्री केसरी कपिल जी ने रैली को हरी झंडी दिखाकर गेट नम्बर 3 से रवाना किया। ब्रह्मवर्चस, भारत माता मंदिर, रानी गली होते हुए सवा सात बजे गेट नम्बर 5 से होकर यह शांतिकुंज लौटी।

प्रधानमंत्री जी के नाम ज्ञापन

शांतिकुंज ने व्यसन मुक्ति दिवस पर अखिल विश्व गायत्री परिवार की ओर से आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी द्वारा हस्ताक्षरित ज्ञापन हरिद्वार के जिलाधिकारी के माध्यम से माननीय प्रधानमंत्री जी को भेजा गया। इस ज्ञापन में नशे को राष्ट्र को खोखला करने वाला सबसे बड़ा कारण बताया गया, जिसका सर्वाधिक शिकार युवा हो रहे हैं।

ज्ञापन में नशे के तमाम दुष्प्रभावों के प्रति प्रधानमंत्री जी का ध्यानाकर्षण करते हुए देश को नशामुक्त करने के लिए कठोर कदम उठाने का आह्वान किया गया है।

अधिकतम लोगों तक पहुँचाया संदेश

इस रैली के लिए सघन बस्ती वाले मार्ग का चयन किया गया था। यह मार्ग में मंदिर और आश्रम बड़ी संख्या में थे। मार्ग के घरों और आश्रमों में व्यक्तिगत संपर्क करते हुए उन तक व्यसनमुक्ति के परचे पहुँचाकर अपना संदेश दिया गया। गायत्री परिवार के समाज के लिए अत्यंत हितकारी इस अभियान से वे सभी प्रभावित और सहयोग के आकांक्षी दिखाई दिये।

युवा क्रान्ति वर्ष का तीसरा राष्ट्रीय पर्व

युवा क्रान्ति वर्ष के अन्तर्गत यह तीसरा राष्ट्रीय पर्व मनाया गया। इसके पहले विवेकानन्द जयंती को युवा जोड़ो अभियान तथा होली पर्व पर अश्लीलता निवारण अभियान चलाया गया था।

वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने किया नेतृत्व

रैली में शांतिकुंज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री कालीचरण शर्मा, श्री रामसहाय शुक्ला, श्री हरिमोहन गुप्ता आदि भी साथ-साथ पैदल ही चल रहे थे। श्री कालीचरण शर्मा जी ने विभिन्न चौराहों पर व्यसनमुक्ति का संदेश दे रहे थे।

हर व्यक्ति पाँच लोगों को करे नशामुक्त

रैली को समापन सभा को श्री कालीचरण शर्मा जी ने ही संबोधित किया। उन्होंने नशे के दानव को जड़ से उखाड़ने के अभियान को राष्ट्र के नवनिर्माण में बहुत बड़ी भागीदारी बताया। इस उत्साह को निरंतर बनाये रखने की प्रेरणा दी।

सभा के अंत में प्रतिभागियों को अपने क्षेत्र में जाकर न्यूनतम पाँच-पाँच अन्य लोगों को व्यसन मुक्त करने के संकल्प दिलाये।

31 मई, व्यसनमुक्ति दिवस पर हुए विशिष्ट कार्यक्रम

बच्चों के लिए आयोजित किये चित्रकला प्रतियोगिता, नाटिका और वृक्षारोपण के कार्यक्रम

जीपीवायजी कोलकाता द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में चित्रकारी करते बच्चे व विजेताओं का सम्मान

कोलकाता (प.बंगाल) : गायत्री परिवार यूथ ग्रुप ने नशा मुक्ति दिवस पर तीन कार्यक्रम आयोजित किये, जिनका बच्चे और समाज पर अच्छा प्रभाव देखा गया।

- व्यसन मुक्ति विषय पर दो वर्गों में बच्चों की चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गयी और विजेता बच्चों को सम्मानित किया गया।
- व्यसन के दुष्परिणामों को दर्शाती एक नाटिका का मंचन हुआ।
- पिछले लगभग 300 सप्ताह से चल रहे प्रत्येक रविवार को वृक्षारोपण के नियमित क्रम में 29 मई के दिन बच्चों को साथ लेकर 51 पौधे लगाये गये और उनकी साक्षी में उन्हें व्यसन मुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी गयी।

रेलवे स्टेशन, नशीले पदार्थों की दुकान और शराब के ठेकों पर हुआ प्रदर्शन

लखीमपुर (उत्तर प्रदेश)

लखीमपुर में जिला युवा प्रकोष्ठ द्वारा व्यसनमुक्ति दिवस के उपलक्ष्य में दिनभर कार्यक्रम आयोजित हुए। प्रातः व्यसन मुक्ति रैली निकाली गयी। इसे मुख्य अतिथि न.पा.अध्यक्षा डॉ. इरा श्रीवास्तव और गायत्री परिवार के श्री जी.पी. सिंह ने सम्बोधित किया।

मध्याह्न कार्यकर्ता गोष्ठी और सायंकाल दीपयज्ञ के माध्यम से नशामुक्ति आन्दोलन को सशक्त करने का आह्वान किया। दीपयज्ञ के अवसर पर 'नशा नाश की जड़' नाटक का मंचन भी हुआ।

24 मई से आरंभ हो गयी रैलियाँ

संत रविदास नगर (उत्तर प्रदेश)

विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर भदोही जनपद में विभिन्न स्थानों पर जनजागरण रैलियाँ निकालने का भरपूर उत्साह देखा गया। 24 मई से ही रैलियों का क्रम आरंभ हो गया। उस दिन प्रातः अभोली ब्लॉक के कुशौली ग्राम में ग्राम प्रधान श्री कड़े दीन की अध्यक्षता में रैली निकली गयी। नशे की हानियाँ और उसे छोड़ने के उपाय बताने वाले पत्रक बाँटे गये। नशा के राक्षसी मुखौटे लगाकर नारे लगाते, प्रेरणा गीतों के माध्यम से नशा से बचने के लिए गाँववासियों को सचेत करते हुए यह रैली कुसौली चौराहे पर पहुँची।

कुसौली चौराहे पर जनसभा का आयोजन किया गया। श्री राजेन्द्र कुमार वहाँ प्रेरक उद्बोधन दिया और श्री रामराज सिंह ने लोगों को नशा न करने का संकल्प कराया। लगभग 50 लोगो ने नशा न करने का संकल्प लिया।

तमाचे से सीख

रोमांचक संस्मरण

पापा (बाबूजी) प्रतिदिन एक पैकेट सिगरेट पी जाया करते थे, पान में जरदा डालकर खाया करते थे। उनकी नकल करने लगा मैं किशोर। एक दिन मम्मी (अम्मा) ने मेरा गंदा स्कूल बैग धोने के लिए उसे खाली किया तो उसमें सिगरेट-माचिस देखकर दंग रह गयी। उसने मेरे गाल पर एक करारा तमाचा जड़ दिया।

मैं रोने लगा, सफाई देने लगा कि बाबूजी को तो कुछ नहीं कह पाती, फिर सारा गुस्सा मुझ पर ही क्यों?

अम्मा ने बड़े प्यार से समझाया, ''कैलाश, बड़ों की गलत नकल करके अपना स्वास्थ्य क्यों खराब कर रहे हो? हर बात मुझसे पूछकर करते हो, यह गंदी आदत शुरू करने से पहले तूने एक बार भी मुझसे नहीं पूछा? तुम्हें हमारी या किसी की भी गलत आदतों का अनुसरण नहीं करना चाहिए।''

अम्मा के तमाचे से उन दिनों मैं अपने आप को अपमानित महसूस कर रहा था, लेकिन नियंत्रण कड़ा था। अम्मा के आगे मेरी सारी अकड़ धरी की धरी रह गयी। मुझे सिगरेट छोड़नी ही पड़ी।

समय बीतता गया। मैं बड़ा हो गया। तभी गले के कैंसर से बाबूजी की अकाल मृत्यु हो गयी। कई और खून के रिश्तेदारों को नशीले पदार्थों के सेवन के परिणाम स्वरूप जटिल रोगों का दर्द झेलते हुए अकाल मृत्यु पाते देखा। उनकी और उनके घर वालों की पीड़ा देखकर मेरी आँखें खुली रह गयीं। इन्हें देखकर आज अम्मा के तमाचे की अहमियत समझ में आती है। जीवन-संध्या की वेला में लोग मुझसे मेरे चिरयौवन का राज पूछते हैं, तो मैं गर्व के साथ उस तमाचे की बात लोगों को बताता हूँ। अम्मा के जीवन काल में तो मैं उन्हें सॉरी या थैंक्यू नहीं कह सका, लेकिन वह करारा तमाचा मुझे हर समय याद रहता है, जिसने मुझे भटकने से बचा लिया।

(प्रस्तुति-श्री दिलीप भाटिया, रावतभाटा, राजस्थान)

मन पत्थर या काँच का बना नहीं होता जो बदला न जा सके। प्रयत्न करने पर मन को सुधारा और बदला भी जा सकता है।

31 मई-नशामुक्ति दिवस | जीवन की खूबसूरती को नशे के बदरंगों से बचाने का प्रयास

युवा क्रान्ति वर्ष का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण दिन था 31 मई-अंतर्राष्ट्रीय तंबाकू निषेध दिवस। अखिल विश्व गायत्री परिवार ने इसे नशामुक्ति दिवस के रूप में पूरे उत्साह के साथ मनाया। देश में हजारों की संख्या में व्यसनमुक्ति रैलियाँ निकाली गयीं। बड़े शहरों के अलावा गाँवों में भी रैलियाँ निकलीं, जनसंपर्क अभियान चलाया गया। सोशल मीडिया के माध्यम से लगभग 150 कार्यक्रमों के छाया चित्र व समाचार तो उसी दिन शांतिकुंज को मिल गये। यहाँ प्रस्तुत हैं जनमानस को प्रभावित करने वाले कुछ विशेष समाचार। यह क्रम अगले अंक में भी जारी रहेगा।

जमशेदपुर में चला हस्ताक्षर अभियान

जमशेदपुर (झारखंड)

नवयुग दल, टाटानगर द्वारा प्रातः साकची मुख्य गोल चक्कर आई हॉस्पीटल के पास नशा उन्मूलन प्रदर्शनी लगायी गयी। इसके साथ ही व्यसनमुक्त समाज के निर्माण के लिए हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया, जिसमें हजारों की संख्या में लोगों ने अपने हस्ताक्षर कर नशा विरोधी अभियान को अपना समर्थन दिया।

गायत्री परिवार ने पूरे देश को नशामुक्त घोषित करने की माँग करते हुए प्रधानमंत्री जी के नाम एक ज्ञापन भेजा। यज्ञ ज्ञापन उपायुक्त महोदय को दिया।

सायंकाल काशीडीह दुर्गा पूजा मैदान से एक अत्यंत आकर्षक नशा मुक्ति रैली निकाली गई। इसका समापन दीपयज्ञ के साथ हुआ। इस अवसर पर श्री देवता प्रसाद शर्मा जी ने समाज को नशा मुक्ति की प्रेरणा दी, संकल्प कराये।

व्यसन मुक्ति दिवस के उपलक्ष्य में 31 मई से पहले बारीडीह, टेल्को, गोविन्दपुर, बागबेड़ा, परसूडीह, सोनारी एवं मानगो आदि जगहों में भी व्यसन मुक्ति दीप महायज्ञ सम्पन्न कराये गये। हजारों नगर-ग्रामवासी इनसे प्रेरित हुए और व्यसनमुक्ति के संकल्प लिये। समाज के उन्नयन के लिए सामूहिक प्रार्थनाएँ की गयीं।

जमशेदपुर में हस्ताक्षर कर अभियान को अपना समर्थन देते लोग

गुजरात ने मनाया व्यसनमुक्ति सप्ताह

245 स्थानों पर लगायी प्रदर्शनी
1,20,000 पुस्तिकाएँ निःशुल्क बाँटीं

गुजरात के प्रांतीय संगठन द्वारा व्यसन मुक्ति सप्ताह मनाते हुए जन-जन को व्यसनमुक्त करने के लिए संगठित-सुनियोजित प्रयास किये गये। 25 मई से 31 मई तक की तारीखों में प्रायः हर जिले में बड़ी प्रभावशाली व्यसन मुक्ति रैलियाँ निकाली गयीं। इनके अलावा विभिन्न शाखाओं ने अपनी तरह से सैकड़ों की संख्या में रैलियाँ निकालीं, जन-संपर्क अभियान चला कर समझदारी अपनाते हुए व्यसनों से बचने-बचाने के संकल्प कराये।

प्रांतीय संगठन द्वारा व्यसनों से होने वाली हानियों को प्रभावशाली ढंग से लोगों तक पहुँचाने के लिए पूरे प्रांत में 245 प्रदर्शनियाँ लगायी गयी थीं। दर्शकों को आवश्यक जानकारी दी गयी, जिज्ञासाओं का समाधान किया गया और व्यसन छोड़ने के उपाय भी बताये गये। इस क्रम में व्यसन मुक्ति संबंधी 1,20,000 पुस्तिकाएँ लोगों में वितरित की गयीं।

पुणे में जनमानस को आकर्षित करती युवाओं की प्रस्तुति

जबलपुर : ज्ञान गंगा इंजीनियरिंग कॉलेज के विद्यार्थी नुक्कड़ नाटक करते हुए

नशे के विरुद्ध तरुणाई ने भरी हुंकार, नुक्कड़ नाटकों ने किया प्रभावित

पुणे (महाराष्ट्र)

रचनात्मक कार्यक्रमों से जुड़े अन्य संगठन

गायत्री परिवार पुणे ने दत्त नगर क्षेत्र में रैली निकाली, जिसमें 200 से अधिक लोगों ने भाग लिया। जगह-जगह नुक्कड़ नाटक, फिल्म प्रदर्शन आदि के माध्यम से जनजागरण का क्रम संपन्न हुआ।

रैली के संयोजन में सिद्धि विनायक संस्कृति प्रतिष्ठान ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मुख्य अतिथि नगर सेवक श्री बेलदरे पाटिल थे। 20 से अधिक लोगों ने रैली से प्रभावित होकर व्यसनमुक्त होने का संकल्प लिया। इस रैली से प्रभावित होकर सिद्धि विनायक ट्रस्ट ने गायत्री परिवार पुणे की विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों-इंद्रायणी स्वच्छता अभियान आदि में सहयोग देने का वायदा किया ।

जबलपुर (म.प्र.)

1000 लोगों ने लिया व्यसनमुक्त जीवन का संकल्प

ज्ञान गंगा इंजीनियरिंग कॉलेज, जबलपुर के छात्र-छात्राओं ने व्यसन मुक्ति दिवस पर गायत्री परिवार एवं दिया, जबलपुर का प्रशंसनीय सहयोग किया। इन विद्यार्थियों ने रैली में भाग लिया और अपने नुक्कड़ नाटकों से समाज को प्रभावशाली संदेश दिया।

रैली का समापन शहर के मध्य मालवीय चौक पर हुआ। समापन सभा की मुख्य अतिथि ज्ञान गंगा इंजीनियरिंग कॉलेज की डीन श्रीमती रुचिता राव एवं श्री सपन जी रहे । इस अवसर पर 1000 लोगों ने मशाल की साक्षी में व्यसनमुक्त जीवन का संकल्प लिया। व्यसनमुक्ति रैली में शहर के कई संगठनों ने भी भाग लिया।

पोर्ट ब्लेअर, अंडमान में निकली रैली

पोर्ट ब्लेयर (अंडमान निकोबार) : गायत्री चेतना केन्द्र पोर्ट ब्लेयर ने भी 31 मई का दिन व्यसन मुक्ति दिवस के रूप में मनाया। इस अवसर पर गायत्री परिवार के 100 लोगों ने तिरंगा पार्क से रैली प्रारम्भ की, जो फीनिक्स की खाड़ी से होती हुई हड्डो कम्युनिटी हॉल पहुँची। वहाँ लोगों को व्यसनों से होने वाली हानियों पर फिल्म दिखाई गयी। गायत्री परिवार और समाज के सजग गणमान्यों ने उस दिन पोर्ट ब्लेयर को व्यसन मुक्त क्षेत्र बनाने के लिए सांसद महोदय को ज्ञापन सौंपा ।

बंदियों ने छोड़े व्यसन

जतारा, टीकमगढ़ (मध्य प्रदेश): शक्तिपीठ जतारा ने उपजेल में दीपयज्ञ का आयोजन करते हुए बंदियों को व्यसन छोड़ने और उनसे दूर रहकर जीवन सुखी बनाने की प्रेरणा दी। परिणाम अत्यंत उत्साहवर्धक रहे। वहाँ उपस्थित 50 बंदियों में से 20 ने बीड़ी, सिगरेट, चरस, तंबाकू, गाँजा, शराब आदि छोड़ने तथा वृक्ष लगाने, गरीबों की सेवा करने जैसे संकल्प लिये।

हैदराबाद में निकली रैली

हैदराबाद (तेलंगाना)

31 मई को हैदराबाद के शिवाजी पुतला, केशव स्वामी नगर, म्युनिसिपल कॉलोनी, सोना होटल जंक्शन, इंदिरा नगर, भरत नगर क्षेत्र में नशा उन्मूलन रैली निकाली गयी। गायत्री परिवार की विभिन्न शाखाओं, दिया-हैदराबाद, राष्ट्रीय बसव दल के कार्यकर्त्ताओं के साथ कक्षा 10 के विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रातः 9 से 10 बजे तक निकली रैली में सैकड़ों लोगों से सम्पर्क कर नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी गई।

मध्य प्रदेश बने मद्यमुक्त प्रदेश

खरगोन (म.प्रदेश)

'चाहे जो मजबूरी हो, शराब बंदी जरूरी हो', 'दुव्यर्सनों से पिण्ड छुडाओ, जीवन अपना सुखी बनाओ' जैसे जोशीले नारों के साथ खरगोन में शराब बंदी के क्रांतिकारी स्वर गूँजे। जिले के अनेक संगठनों ने गायत्री परिवार के साथ मिलकर शराब बंदी संकल्प यात्रा निकाली। मध्य प्रदेश को मद्य प्रदेश के कलंक से बचाकर उसे पवित्र प्रदेश बनाने का आग्रह मुख्यमंत्री जी से किया गया। रैली के अंत में कलेक्टर श्री अशोक कुमार वर्मा को इस आशय का ज्ञापन दिया गया।

रैली की झलकियाँ

- ऐसी विधवा महिलाएँ जिनके पति को शराब रूपी सुरसा निगल गई, वे रो-रो के पुकार रही थी शिवराज मामा हमारा पति तो गया, अब भाई बेटों को बचालो। रैली में अनेक संगठनों व कई गाँवों के लगभग 5000 लोगों ने भाग लिया।
- कलेक्टर को शराब बंदी के संदर्भ में 100 से अधिक ज्ञापन दिये गये।
- समाज कल्याण विभाग के अधिकारी/कर्मचारियों ने भी गायत्री परिवार का साथ दिया।
- प्रबुद्ध लोगों ने शराब बंदी को लाडली लक्ष्मी, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, जननी सुरक्षा आदि से कहीं ज्यादा महिलाओं के लिए हितकारी योजना बताया।
- रैली का मुख्य आकर्षण आस्था ग्राम ट्रस्ट खरगोन द्वारा गठित सम्बल समूहों के माध्यम से शराबमुक्त हुए लोग घोडों पर सवार थे, जिनके हाथों में तक्तियों पर लिखा था, **''मैंने तो शराब को जीत लिया, आप भी साहस कीजिए।''**

गायत्री जपो, सद्बुद्धि जगाओ। नशे से अपना पिण्ड छुड़ाओ

पटना (बिहार)

विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर पटना के राजवंशी नगर एवं पटेल नगर स्थित नवचेतना विस्तार केन्द्र द्वारा प्रातः 8 बजे से पुनाईचक पार्क से व्यसन मुक्ति रैली आरम्भ की गयी। यह नगर के कई मार्गों से गुजरती हुई अपनी मंजिल पर पहुँचकर एक सभा में बदल गयी।

पटना में नवयुग दल की प्रभावशाली प्रस्तुति

सभा को संबोधित करते हुए अवकाश प्राप्त आईएएस श्री मधेश्वर प्रसाद सिंह ने नशामुक्ति अभियान को समाज की बहुत बड़ी सेवा बताया। उन्होंने कहा कि गायत्री मंत्र की नियमित उपासना से सन्मार्ग की ओर प्रेरित बुद्धि नशे से बचाती है और नशा छुड़ाती भी है।

रैली में सभी वरिष्ठ-कनिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। इस अवसर पर राजवंशी नगर नवचेतना विस्तार केन्द्र कार्यालय में एक आकर्षक प्रदर्शनी भी लगायी गयी।

आठों उपजोनों के साथ-साथ बढ़े कदम

लखनऊ (उत्तर प्रदेश) : देव दुर्लभ मानव जीवन को उसके लक्ष्य से भटकाने वाले व्यसनों का समूल नाश करने के संकल्प के साथ लखनऊ में विशाल रैली निकाली गयी। सायं 5 बजे परिवर्तन चौक से इसका शुभारंभ हुआ। आठों जोनों के प्रभारी सर्वश्री अरविन्द निगम, अनिल निगम, देशबन्धु तिवारी, अशोक द्विवेदी, अमरनाथ दुबे, सुरेन्द्र सिंह तथा उमानन्द शर्मा सैकड़ों कार्यकर्त्ता रैली में शामिल हुए।

लखनऊ में निकली महारैली

सब मिल नशा हटायेंगे, समाज को स्वस्थ बनायेंगे। बीड़ी-गुटका-पान-शराब, इनकी आदत बड़ी खराब। बीड़ी पीकर खाँस रहा है, मौत के आगे नाच रहा है। हम बदलेंगे, युग बदलेगा आदि नारों से नगर की सड़कें गुंजायमान हो गयीं। जगह-जगह संदेश दिये गये तथा लोगों से व्यसन मुक्ति के संकल्प पत्र भरवाये गये।

बागपत (उत्तर प्रदेश) : गायत्री परिवार युवा मंडल बागपत के नेतृत्व में निकाली गयी रैली में 300 लोगों ने भाग लिया। इस अवसर पर नशा छोड़ने वाले 3 व्यक्तियों का सम्मान किया गया। 2000 से अधिक लोगों ने व्यसन मुक्ति संकल्प पत्र भरे।

ईमानदारी बरगद के पेड़ के समान है, जो देर से बढ़ती, किन्तु चिरस्थायी रहती है।

प्रज्ञा अभियान
16 जून 2016

नारी उत्कर्ष एवं नारी जागरण अभियान के अंतर्गत अपनायी गयी सक्रियता

पीड़ित-पिछड़ी महिलाओं के प्रति दिया, मुम्बई की संवेदना और सहयोग

शारीरिक शोषण की शिकार महिलाओं के लिए जाँच शिविर लगाया

बोईसर, पालघर (महाराष्ट्र)
दिया, मुम्बई ने एक अनोखी पहल में रैस्क्यू फाउंडेशन, बोईसर के साथ 27 मार्च को शारीरिक शोषण की शिकार महिलाओं के हितार्थ स्वास्थ परिक्षण का शिविर लगाया। डॉ. राजेन्द्र ने इस शिविर के लिए सेवाएँ दीं। उन्होंने महिलाओं को बेझिझक अपनी समस्याएँ बताने का आग्रह किया। कुल 128 महिलाओं ने इसका लाभ लिया।

दिया, मुम्बई की टीम गर्भवती बहिनों का पुंसवन संस्कार कराते हुए

शिविर सम्पन्न कराने दिया, मुम्बई की 14 सदस्यीय टीम पहुँची, जिसमें कई चिकित्सक शामिल थे। स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. राजेन्द्र, सामान्य रोग चिकित्सक डॉ. अनिता सरन तथा दंत रोग विशेषज्ञ डॉ. गिरिश पाटिल ने अलग-अलग पटलों पर बहिनों की जाँच कर उनकी चिकित्सा की। दिया सदस्यों ने उन महिलाओं का दायित्व ग्रहण किया, जिनको अग्रिम चिकित्सा अथवा अस्पताल में भरती होने की आवश्यकता थी।

गर्भवती महिलाओं का पुंसवन संस्कार कराया गया। इस अवसर पर गायत्री चालीसा, मंत्र लेखन, प्रेरक वाक्यों के कलैण्डर, प्रसाद, कपड़े, खिलौने, चॉकलेट आदि के वितरण से वातावरण पारिवारिक आत्मीयता से ओतप्रोत हो गया।

विधवा ग्रामीण किसान बहिनों के उत्थान के लिए वन्दना फाउण्डेशन का सहयोग करने का संकल्प लिया

अणुशक्ति नगर, मुम्बई (महाराष्ट्र)
भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (बार्क) मुम्बई से जुड़े दिया कार्यकर्ताओं ने 16 अप्रैल को 'इक्कीसवीं सदी-नारी सदी' विषय पर अणुशक्ति नगर स्कूल संख्या-2 में विचार गोष्ठी एवं दीपयज्ञ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन सुश्री सुमन राय ने किया, जो ग्रामीण किसानों की विधवाओं के कल्याण कार्यों में संलग्न हैं। उन्होंने उन महिलाओं की दुःखद स्थिति का चित्रण करते हुए उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए सहयोग का हाथ बढ़ाने के आह्वान सभी से किया।

अपर्णा शर्मा ने दो बच्चियों के साथ ओडिशी नृत्य प्रस्तुत किया। उन्होंने महिला सशक्तीकरण से संबंधित प्रभावी नाटिका भी प्रस्तुत की, जिसमें बाल संस्कार शाला के बच्चों ने अभिनय किया था। इस नाटिका के माध्यम से परिवार में नारी की स्थिति तथा कन्या की सामाजिक स्थिति दर्शायी गयी थी।

नारी सशक्तीकरण में प्रधानमंत्री जी के योगदान एवं उनकी विनम्रता का भी सम्मान किया गया। रंगोली, प्रज्ञा गीतों तथा युग साहित्य ने इस अवसर पर आयोजित दीप यज्ञ को और अधिक आकर्षक बना दिया। आरंभ में श्रीमती ज्योति पंडया ने सभी को दिया, मुम्बई की गतिविधियों की जानकारी दी।

दिया, मुम्बई ने ग्रामीण किसान विधवाओं के उत्थान के लिये वंदना फाउण्डेशन के साथ कार्य करने का निश्चय किया है।

सामूहिक आदर्श विवाहों से गरीबों का सहयोग

सेवाभाव के साथ सुसंस्कारी गृहस्थ जीवन जीने की प्रेरणा

राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़)
गायत्री शक्तिपीठ राजनांदगाँव ने लगातार सातवें वर्ष गरीब जोड़ों के सामूहिक विवाह का कार्यक्रम आयोजित किया। मुख्यमंत्री निर्धन गरीब कन्या विवाह योजना के अंतर्गत मंडी में आयोजित इस कार्यक्रम में 125 जोड़े परिणय सूत्र बंधन में बँधे। गायत्री परिवार के पुरोहित एवं उपाचार्यों की टोली ने उन्हें आदर्श गृहस्थ जीवन के सूत्र बताये, उन्हें लोकमंगल के लिए समर्पित जीवन जीने की प्रेरणाएं दीं।

- लगातार 7वें वर्ष हुआ आयोजन
- 125 जोड़ों का विवाह हुआ

माननीय मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने स्वयं इस कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार की यह सेवा भावना पिछड़े समाज को आगे लाने में शासन का महत्त्वपूर्ण सहयोग कर रही है।

कुर्मी समाज का आदर्श विवाह, केन्द्रीय मंत्री भी पधारे

बरेली (उत्तर प्रदेश)
गायत्री शक्तिपीठ बरेली के सहयोग से 17 अप्रैल को कुर्मी क्षत्रिय सभा द्वारा ग्यारह जोड़ों का दहेज रहित सामूहिक आदर्श विवाह सम्पन्न कराया गया। केन्द्रीय मंत्री श्री संतोष गंगवार, श्री भगवत शरण गंगवार एवं श्री सुभाष पटेल भी इस समारोह में शामिल हुए। मंत्री महोदय ने कहा कि गरीब परिवार की कन्याओं का विवाह कराना समाज का एक बड़ा उपकार है। उन्होंने उत्तम शिक्षा और आदर्श कर्मकाण्ड के साथ नवदम्पतियों को गृहस्थ जीवन में प्रवेश कराने की गायत्री परिवार बरेली की पहल की भी सराहना की।

मुस्लिम जोड़े भी शामिल हुए

नावाडीह, बोकारो (झारखंड)
अक्षय तृतिया के दिन शांतिवन भलमारा में 16 जोड़ों का सामूहिक विवाह संपन्न हुआ। इनमें छः जोड़े मुस्लिम परिवारों के थे, जिनका निकाह मौलाना ने कराया। स्थानीय मुस्लिम भाईयों ने इस कार्यक्रम की सराहना की और कहा कि यह समाज के लिए एक प्रेरणादायक संदेश है। केन्द्र के सभी परिजनों के सहयोग और कठिन मेहनत से विवाह कार्यक्रम को सफल बनाया जा सका।

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान के लिए जयपुर में हुआ प्रांतीय सम्मेलन

डॉ. ओ.पी. शर्मा कार्यकर्त्ताओं को संबोधित करते हुए। उनके बाँयें डॉ. गायत्री शर्मा एवं श्री घनश्याम पालीवाल, दायें श्री जयराम मोटलानी

जयपुर (राजस्थान)
जयपुर शहर में राजस्थान के प्रत्येक जिले से पधारे कार्यकर्ताओं की गोष्ठी हुई। इसे संबोधित कर शान्तिकुंज प्रतिनिधि डॉ. ओ. पी. शर्मा जी ने कार्यकर्ताओं के श्रद्धा-समर्पण भाव को पोषित किया। डॉ. गायत्री शर्मा ने 'गर्भोत्सव संस्कार' को विश्वव्यापी अभियान का स्वरूप दिये जाने की आवश्यकता और विधि-व्यवस्था बतायी। हर जिले में इस अभियान की समिति बनाकर सक्रियता बढ़ाने का निर्देश भी दिया। श्री जयराम मोटलानी जी ने हर मुहल्ले एवं हर गाँव को दो-दो भाई-बहिनों द्वारा गोद लेकर 'बाल संस्कार शाला' अभियान को गति देने की प्रेरणा दी।

शांतिकुंज प्रतिनिधियों ने गर्भोत्सव संस्कार को विश्वव्यापी अभियान बनाने की प्रेरणा दी

अगले दिन प्रशासनिक अभियान 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' के अंतर्गत प्रशासनिक अधिकारियों एवं मंत्री महोदया श्रीमती अनीता बघले जी की उपस्थिति में कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। डॉ. गायत्री शर्मा ने इसमें गर्भोत्सव संस्कार के द्वारा पूरे घर का वातावरण अनुकूल बनाने, गर्भवती स्त्री के शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखने एवं निर्धारित संकल्पों का दृढ़तापूर्वक पालन करने संबंधी मार्गदर्शन प्रशासनिक अधिकारियों को दिया। उन्होंने बताया कि कन्या भ्रूण हत्या को रोकने में धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाएँ कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। डॉ. ओ. पी. शर्मा ने बालिकाओं की शिक्षा पर पूज्य गुरुदेव के विचार अभिव्यक्त किये।

मदर्स डे पर नारी की समस्याओं संबंधी सेमीनार

सूरत (गुजरात)
मदर्स डे पर गायत्री परिवार सूरत ने 'नारी की समस्या तथा उसका समाधान' विषय पर एक सेमिनार का आयोजन द्वारा किया। इसमें नारी की गरिमा, नारी स्वास्थ्य, ममता-मातृत्व आदि बिन्दुओं पर चर्चा हुई।

कार्यक्रम में विचरता समुदाय के लिए सेवाएँ प्रदान कर रही युवती श्रीमती मित्तल पटेल ने अपने जीवन की संवेदनशील घटनाओं और शिक्षाओं से अवगत कराया। श्रीमती टीनाबेन पटेल ने युगऋषि के साहित्य में से नारी की विभिन्न समस्याओं के समाधान प्रस्तुत किये। तथा डॉ. जुग्ती रावल पटेल ने नारी संबंधी रोग और उनसे बचने के उपाय बताये। बाल कलाकारों ने बेटी बचाओ, व्यसन मुक्ति, पर्यावरण संबंधी नुक्कड़ नाटिकाएँ भाव प्रधान शैली में प्रस्तुत करते हुए सबको प्रभावित किया। प्रज्ञागीत भी प्रस्तुत किये गये।

कई प्रतिष्ठित समाजसेवी बहिनों ने अपने अनुभवों के साथ नारी उत्कर्ष के सूत्र बताये

शिविर में मेयर श्रीमती अस्मिता बेन शिरोया भी उपस्थित थीं। उन्होंने नदी स्वच्छता, शिक्षा आदि आन्दोलनों में सूरत म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन का पूरा-पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया। अखिल हिंद महिला परिषद की प्रमुख श्रीमती वर्षा बेन ठक्कर ने स्वरचित मार्मिक कविता 'माँ' का पाठ किया। सेमिनार में 400 से अधिक लोगों ने भाग लिया।

छत्तीसगढ़ की जशपुर शाखा ने मनोरा ग्राम में कई आन्दोलनों को गति दी

गोसंरक्षण एवं व्यसनमुक्ति

गौ ज्ञान-विज्ञान एवं व्यसन मुक्ति अभियान जैसे कई रचनात्मक कार्यक्रम गायत्री परिवार की जशपुर इकाई द्वारा मनोरा में आयोजित किये गये। इन विषयों पर प्रशिक्षित टीम द्वारा वीडियो फिल्मों के माध्यम से बड़ी महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ दी गयीं। वीडियो फिल्मों में गौ माता के आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक पहलुओं को दिखाते हुए उसकी महत्ता बताई गई, वहीं नशा से संबंधित तथ्यों को दिखाते हुए गांववासियों को नशा न करने की प्रेरणा गई।

ग्रामीण स्वावलंबन

माँ भगवती स्वावलंबन केन्द्र मनोरा के अंतर्गत स्वरोजार के अवसर को सशक्त बनाने हेतु अगरबत्ती का निर्माण, साबुन, वाशिंग पाउडर, वैसलीन आदि के निर्माण की विधियाँ सिखाई गयीं। उल्लेखनीय है कि स्थानीय गायत्री परिवार द्वारा ऐसे प्रशिक्षणों के माध्यम से ग्रामीणों को रोजगार का अवसर प्रदान कर उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाने का अभियान चलाया जा रहा है।

अन्य कार्यक्रम

- सात जोड़ों का दहेज मुक्त आदर्श विवाह गायत्री परिजनों द्वारा संपन्न कराया गया।
- मनोरा में जिला स्तरीय 6 दिवसीय युवा चेतना शिविर का आयोजन भी किया गया जिसमें युवाओं को नैतिक, चारित्रिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा देते हुए व्यक्ति निर्माण के सूत्र बताए गए।

समाजसेवा में समर्पित रहा जीवन

मरणोपरान्त जनहित में सौंप दिया अपना तन

शांतिकुंज की जीवनदानी समर्पित साधिका श्रीमती हंसाबेन रावल 88 वर्ष की आयु में 30 मई के दिन ब्रह्ममुहूर्त में अपनी पावन गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गयीं। उनका जीवन ज्ञानयज्ञ के लिए समर्पित रहा। शरीर में जब तक सामर्थ्य रही, वे ज्ञानरथ चलाती रहीं। वृद्धावस्था में भी उनकी भक्ति व उमंग प्रत्येक कार्यकर्त्ता के लिए प्रेरणादायी थी। शांतिकुंज परिवार ने उनके इसी समर्पण और हौसले का भावभरा स्मरण करते हुए दिवंगत देवात्मा को भावभरी विदाई दी।

स्व. श्रीमती हंसाबेन पिछले 31 वर्षों से शांतिकुंज में सेवाएँ दे रही थीं। कई वर्षों पूर्व ही निजी आवश्यकता के लिए कुछ धन रखकर शेष सभी मिशन को समर्पित कर दिया था। उन्होंने अपने जीते-जी देहदान का संकल्प लिया था। इस संकल्प के अनुरूप ही मरणोपरांत उनकी देह को समीप के मेडिकल कॉलेज श्रीराम हॉस्पिटल एण्ड यूनिवर्सिटी, जॉलीग्रांट, जिला देहरादून को सौंप दिया गया।

हर वर्ग में दिखाई दे रहा है युग निर्माण आन्दोलन का प्रभाव

विश्व हिंदू परिषद के वर्गों में गूँजती है प.पू. गुरुदेव की अमृतवाणी

उडुपी (कर्नाटक)

उडुपी कर्नाटक में विगत अप्रैल माह में विश्व हिन्दू परिषद के वर्ग (शिविर) में शान्तिकुंज के प्रतिनिधियों ने ढपली एवं कर्मकाण्ड का प्रशिक्षण प्रदान किया। शिविर में विश्व देश के सभी 33 प्रान्तों के प्रायः 112 प्रमुख प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

शांतिकुंज से प्रशिक्षण देने श्री प्रताप शास्त्री एवं श्री जयराम मोटलानी पहुँचे। उन्होंने दीपयज्ञ, जन्मदिवस एवं यज्ञ के कर्मकाण्ड के प्रशिक्षण के साथ समाज निर्माण में उनकी उपयोगिता की विस्तार से चर्चा करते हुए उन्हें एक आन्दोलन के रूप में समाज में स्थापित करने के लिए सहमत किया।

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि पेजावर मठाधीश श्री विशेषतीर्थ जी महाराज थे। श्रीमठ के अधिष्ठाता श्री नरसिंहा आश्रम जी भी उपस्थित थे। दोनों ही शांतिकुंज आ चुके हैं। उन्होंने अपने शान्तिकुंज प्रवास के सुखद अनुभव सुनाये। उन्होंने बड़े उत्साह के परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य की पुस्तकों का कन्नड़ में अनुवाद कराने की जिम्मेदारी ली।

प्रमुख बातें

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के विचार इतने सारगर्भित हैं कि हम अपने हर वर्ग में उनकी 5 मिनट की अमृतवाणी अवश्य सबको सुनाते हैं।
श्री वसन्त रथ जी, विहिप

श्रीमठ के अधिष्ठाता श्री नरसिंहा आश्रम जी ने गुरुदेव की पुस्तकों का कन्नड़ में अनुवाद कराने की जिम्मेदारी ली।

कार्यक्रम में विश्व हिन्दू परिषद के महामंत्री श्री सम्पतराय जी, अध्यक्ष श्री दिनेश सिंह जी, उपाध्यक्ष श्री जगन्नाथ साही जी, सत्संग प्रमुख श्री वसन्त रथ जी भी पधारे थे। श्री वसन्त रथ जी ने कहा कि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के विचार इतने सारगर्भित हैं कि हम अपने हर वर्ग में उनकी 5 मिनट की अमृतवाणी अवश्य सबको सुनाते हैं।

राष्ट्रीय कैमीकल्स एंड फर्टीलाइजर लि. में संगोष्ठी
औद्योगिक क्षेत्र में आध्यात्मिक प्रबंधन की उपयोगिता बतायी

आर.सी.एफ.एल. के अधिकारियों को सम्बोधित करतीं सुश्री कविता अल्वा

मुंबई (महाराष्ट्र)

दिया, मुम्बई ने प्रतिष्ठित औद्योगिक संस्थान राष्ट्रीय कैमीकल्स एंड फर्टीलाइजर लिमिटिड के अलीबाग स्थित थाल उपक्रम के वरिष्ठ अधिकारियों की गोष्ठी आयोजित की। सुश्री कविता आल्वा ने इसे 'कॉरपोरेट जगत की समस्याओं के निराकरण में अध्यात्मिकता का योगदान' विषय से संबोधित किया।

सुश्री अल्वा ने कहा कि अध्यात्म प्यार और सहकार की भावना का विकास करते हुए कर्मचारियों के बीच परिवार जैसे संबंध स्थापित करता है, वातावरण को खुशहाल बनाता है। इससे संस्थान के प्रति कर्मचारियों का अपनत्व बढ़ेगा तो उत्पादकता एवं लोकप्रियता में निश्चित रूप से वृद्धि होगी।

प्लांट के कार्यकारी निदेशक श्री यू वी धातरक ने इन विचारों को अत्यंत उपयोगी बताया और कहा कि ऐसे विचारों से उन्हें संवेदना और सहकार की भावना बढाने में मदद मिली है। श्री दिनेश विजयवर्गीय द्वारा लगाये गये साहित्य स्टाल से भी अधिकारी लाभान्वित हुए।

सिंधी संत आसूदाराम जी के जन्म दिवस पर 40 बच्चों का यज्ञोपवीत संस्कार

लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

लखनऊ में सिन्धी समाज के प्रमुख स्थान श्री शिव शान्ति सन्त आसूदाराम आश्रम में बैसाखी पर्व पर 40 बच्चों का सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न हुआ। रामनवमी पर्व के दिन सन्त आसूदाराम जी का 121 वाँ जन्मोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर 8 जोड़ों का सामूहिक विवाह हुए। यह संस्कार सम्पन्न कराने शान्तिकुंज प्रतिनिधि श्री जयराम मोटलानी एवं श्रीमती नीलम मोटलानी पहुँचे थे। वहाँ सिन्ध वेलफेयर सोसायटी की एक मीटिंग में प्रायः 80 बहिनों के बीच में नारी सशक्तीकरण पर पूज्यवर के विचार दिये। अभ्युदय योग कक्षाओं में भी पूज्यवर के क्रांतिकारी विचार दिये गये।

मुस्लिम समाज को भाये युगऋषि के विचार

जैतहरी, अनूपपुर (म.प्र.)

प्रज्ञा पुराण कथा से प्रभावित हुए प्राचार्य डॉ. अशफाक अहमद एवं मुस्लिम समाज के प्रमुख श्री तस्लीम जुनजानी

उच्चत्तर मा. विद्यालय, जैतहरी के मिनी स्टेडियम में 9 कुंडीय गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथा का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में विद्यालय के प्राचार्य डॉ. अशफाक अहमद एवं मुस्लिम समाज के प्रमुख श्री तस्लीम जुनजानी ने भी श्रद्धापूर्वक भाग लिया। वे गायत्री परिवार की विचारधारा और यज्ञ के सर्वहितकारी दर्शन से अत्यधिक प्रभावित हुए। कार्यक्रम का संचालन सुश्री मीता ठक्कर ने किया।

डॉ. अशफाक अहमद एवं श्री तस्लीम जुनजानी ने कहा कि कार्यक्रम में दिया गया संदेश सुप्त मानवीय संवेदना और संभावनाओं को जगाकर महामानव बनने की प्रेरणा देने वाला है। उन्होंने गायत्री परिवार के कार्यक्रम को चलता फिरता स्कूल/मदरसा बताया। मुस्लिम समुदाय कई अन्य महानुभावों ने भी गायत्री परिवार के संदेश को मुल्क में अमन-चैन तथा भाईचारे की को बढ़ाने वाला बताया।

डॉ. अशफाक अहमद एवं श्री तस्लीम जुनजानी ने बताया कि आचार्य जी के विचारों का टेलीविजन पर नियमित प्रसारण होना चाहिए। इस आशय का पत्र उन्होंने प्रधानमंत्री को भी लिखा है।

अधिवक्ताओं के सम्मेलन को संबोधित करते शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री गंगाधर चौधरी

अधिवक्ताओं को युगधर्म की याद दिलाई

बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

बिलासपुर शाखा द्वारा प्रतिभाओं को युगऋषि के विचारों से अवगत कराकर उन्हें युग निर्माण आन्दोलन में अग्रणी दायित्व निभाने के लिए सहमत करने के प्रयास किये जा रहे हैं। इस क्रम में शकितपीठ पर डॉक्टरों का सम्मेलन, शिक्षाविद् सम्मेलन, नारी सशक्तीकरण संगोष्ठी और पाठक सम्मेलन हुए। इसी कड़ी में 11 अप्रैल को अधिवक्ताओं का सम्मेलन आयोजित किया गया।

सम्मेलन के मुख्य वक्ता एपीलेट फोरम, भोपाल के न्यायाधीश डॉ. अनिल पारे थे। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव के विचारों के अनुरूप सत्य, प्रेम और न्याय की बड़े सुबोध शब्दों में व्याख्या की। उन्होंने कहा कि जब ये सूत्र जीवन उतरते हैं तो कमाल कर देते हैं, समाज के उत्कर्ष की उमंग जगाते हैं। इस संदर्भ में उन्होंने कई राष्ट्र निर्माता अधिवक्ताओं के उदाहरण भी दिये।

दक्षिण पूर्व जोन समन्वयक शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री गंगाधर चौधरी ने परम पूज्य गुरुदेव के दिये युग निर्माण सत्संकल्पों की

> "मोहनदास करमचंद गाँधी, सरदार पटेल, बालगंगाधर तिलक, विपिनचंद्र पाल, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, भूलाभाई देसाई, डॉ. भीमराव अंबेडकर, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद आदि अनेक अधिवक्ताओं ने राष्ट्र के निर्माण में अविस्मरणीय योगदान दिया है। आज के न्यायविद उनके चरित्र-चिंतन को ध्यान में रखें, लोकहित की रहा पर चल पड़ें तो देश का कायाकल्प हो जायेगा।"
> - न्यायमूर्ति डॉ. अनिल पारे, भोपाल

व्याख्या करते हुए बताया कि ये सूत्र श्रेष्ठ समाज की संरचना का आधार हैं।

श्री सनमान सिंह-सेवा निवृत जिला व सत्र न्यायाधीश, डॉ. विनय पाठक-अध्यक्ष छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग, श्री गोविंद गिरि-पूर्व सांसद तथा श्री सी.के. केसरवानी-बार एसोसिएशन हाईकोर्ट के अध्यक्ष विशेष रूप से उपस्थित रहे। मुख्य प्रबंधक श्री सी.पी. सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया। श्री राजकुमार श्रीवास ने कार्यक्रम संचालन किया। श्री द्वारिका पटेल ने आभार व्यक्त किया।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धांजलि

श्री रामस्वरूप श्रीधर, झाँसी (उ.प्र.)

82 वर्षीय वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री रामस्वरूप श्रीधर का 4 अप्रैल को देहावसान हो गया। वे सन् 1960 से ही मिशन से जुड़े थे। अपने क्षेत्र में वे 400 अखण्ड ज्योति एवं युग निर्माण योजना पत्रिकाएँ वितरित करते थे।

श्री सूरजमल मंगल, पाचैर, राजगढ़ (म.प्र.)

श्री सूरजमल मंगल जी 72 वर्ष की आयु में गुरुसत्ता के साथ एकाकार हो गये। गायत्री मंदिर की स्थापना एवं युग साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने में उन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

श्री सौजेयेन्द्र प्रसाद, जमशेदपुर (झारखंड)

जमशेदपुर के सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री सौजेयेन्द्र प्रसाद का निधन हो गया। वे मिशन की पत्रिकाओं के प्रचार-प्रसार में पूरी निष्ठा के साथ सक्रिय रहे। उनके सुपुत्र डॉ. प्रत्यूष प्रसाद ने अपने पिता को एक सार्थक श्रद्धांजलि देते हुए उसी श्रद्धा-निष्ठा के साथ युग निर्माण आन्दोलन को गति देने का संकल्प लिया।

झरिया, धनबाद (झारखंड)

पिछले 26 वर्षों से मिशन की सेवा कर रहे नैष्ठिक कार्यकर्त्ता श्री महेन्द्र कुमार शर्मा का 67 वर्ष की आयु में 10 अप्रैल को देहावसान हो गया। वे अविवाहित रहे। उन्होंने अपनी सेवाभावना से लोगों का दिल जीता और खूब सम्मान पाया।

शौर्य दिवस से युवा क्रांति रथ का शुभारंभ

युवाओं के व्यक्तित्व परिष्कार में सहयोगी शिक्षकों का सम्मान

अकोला (महाराष्ट्र) : भूपालसागर के जाशमा में गायत्री परिवार की अकोला शाखा द्वारा शिक्षक सम्मान समारोह का अयोजन किया गया। इसके साथ में शौर्य युवा महोत्सव भी मनाया गया। इस समारोह के पश्चात् युवा क्रांति वर्ष के अंतर्गत युवा क्रांति रथ यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया।

शिविर में सांसद सीपी. जोशी ने महाराणा प्रताप के शौर्य को नमन करते हुए कहा की संस्कारों से ही देश शक्तिशाली होता है। संस्कृति के उभार से ही कृतित्व में सुधार होता है। सत्य की संस्कृति को आगे बढ़ने से ही मानव जीवन का उत्थान संभव है। इस समारोह में छात्राओं द्वारा 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' विषय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया।

युवा जागरण दीपयज्ञ से रचनात्मक आन्दोलनों को गति मिली

लखीमपुर-खीरी (उत्तर प्रदेश) : 5 मई को मुहल्ला नौरंगाबाद और गंगोत्री नगर में 'युवा जागरण अभियान' के अंतर्गत युवा जागरण दीपयज्ञ संपन्न हुआ। प्रातः प्रभात फेरी निकाली गयी। घरों के बाहर जल संरक्षण, नशामुक्ति, पर्यावरण संरक्षण, युवा जागरण, नैतिक शिक्षा संबंधी प्रेरक सद्वाक्य वाले स्टीकर लगाए गये।

लखीमपुर खीरी के युवा प्रकोष्ठ द्वारा निर्मल गंगा जन अभियान में इस वर्ष 3551 पौधे लगाने का संकल्प भी लिया गया।

युवा व्यक्तित्व परिष्कार शिविर

अंबिकापुर, सरगुजा (छत्तीसगढ़)

गायत्री शक्तिपीठ अंबिकापुर शाखा ने 1 से 3 मई की तरीखों में निकटवर्ती सुन्दरगंज गाँव में युवाओं के व्यक्तित्व निर्माण के लिए आवासीय शिविर आयोजित किया। युवा उत्कर्ष के विविध विषयों पर प्रशिक्षण के साथ प्रतिभागी युवाओं द्वारा व्यसनमुक्ति रैली निकाली गयी तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों से जनजागरण का अभ्यास किया गया। गाँव के 50 युवाओं ने इसका लाभ लिया। समापन सत्र में आये ग्राम सरपंच ने सही दिशा में बढ़ते युवा कदमों की सराहना की।

परिवर्तन से डरना और संघर्ष से कतराना मनुष्य की बहुत बड़ी कायरता है।

'हमारा अभियान-युग निर्माण' के उद्घोष के साथ सिंहस्थ-2016 सम्पन्न

उज्जैन में आयोजित सिंहस्थ-2016 में गायत्री परिवार द्वारा लगाये गये शिविर की विशेषताएँ सक्रियता एवं उपलब्धियाँ सार-संक्षेप में प्रस्तुत हैं। 21 अप्रैल से 22 मई तक चले इस शिविर में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ, प्रज्ञा पुराण कथा एवं ज्ञानयज्ञ का क्रम प्रतिदिन नियमित रूप से चला।

औसत भारतीय जीवन का दर्शन

गायत्री परिवार द्वारा सिंहस्थ में ज्ञानगंगा प्रवाहित की गयी। औसत भारतीय जीवन में सादगी, स्वच्छता, परोपकार, अनुशासन, समर्पण, सहकार, प्यार, सहयोग की बातें ही नहीं कही गयीं, अपित यह सब गायत्री परिवार के शिविर में चरितार्थ होती दिखाई दीं। अपने शिविर में वैभव और शक्ति प्रदर्शन नहीं, सादगी और सेवाभाव के दर्शन होते रहे।

नौ दिवसीय संजीवनी साधना शिविर

एक माह के शिविर में तीन नौ दिवसीय संजीवनी साधना शिविर सम्पन्न हुए। 21-29 अप्रैल तक के शिविर में 120 से अधिक साधकों ने, 1 से 9 मई के शिविर में 100 से अधिक साधकों ने तथा 11 से 19 मई के शिविर में लगभग 85 साधकों ने भाग लिया।

कलश यात्रा में शामिल मंदसौर की बहिनों का बैण्ड, नृत्य करते जोबट के वनवासी और यज्ञशाला पहुँची कलशधारी बहिनें

प्रेरणादायी, उत्साहवर्धक कलश यात्रा

शिविर का शुभारंभ 20 अप्रैल को 501 कलशों के साथ निकाली गयी विशाल शोभायात्रा से हुआ। चामुण्डामाता चौराहा स्थित प्राचीन पशुपतिनाथ मन्दिर प्रांगण से यह आरंभ हुई। 4.25 किलोमीटर की यात्रा में 2500 से अधिक परिजनों ने भागीदारी की।

कलश यात्रा के प्रमुख आकर्षण

- उज्जैन शहर में पहली बार महिला बैण्ड की प्रस्तुति। इस बैण्ड में मंदसौर की 25 बहिनों का बैण्ड कलश यात्रा में शामिल हुआ।
- जोबट (झाबुआ) का आदिवासी नर्तक दल, 5 ज्ञानरथ, 4 बैण्ड एवं 3 झाँकियाँ के साथ यह कलश यात्रा निकली।
- 4.25 किलोमीटर मार्ग में 16 स्थानों पर पुष्पवर्षा सहित स्वागत समारोह आयोजित हुए। उज्जैन वासियों ने गृहस्थ योगियों की इस प्रवेशाई का जो शानदार स्वागत किया, वह दर्शनीय था।

मौसम ने ली परीक्षा

5 मई को सायंकाल 4-5 बजे के बीच आये भयंकर चक्रवाती तूफान और वर्षा का सर्वाधिक प्रभाव गायत्री परिवार के शिविर वाले मंगलनाथ क्षेत्र में ही था। उस दिन सिंहस्थ क्षेत्र में पेड़ गिरने, टीन उड़कर गिरने से 7 व्यक्तियों की मौत हुई थी, लेकिन गायत्री परिवार पर गुरुकृपा के दिव्य संरक्षण की अनुभूति यहाँ भी हुई।

तूफान के समय शिविर में पावन प्रज्ञा पुराण कथा चल रही थी। करीब डेढ़ हजार परिजन पाण्डाल में मौजूद थे, पर गुरुदेव की कृपा से किसी को खरोंच तक नहीं आई। देव परिवार का मन्दिर तथा विचार मंच पर की गई देव स्थापना को कोई क्षति नहीं हुई। यज्ञशाला के मंच पर स्थापित अखण्ड दीपक भी प्रज्वलित रहा।

सारे आवासों में पानी भर गया, जमीन पर कीचड़ ही कीचड़ हो गया, चलना भी मुश्किल हो रहा था। कुछ परिजनों को गायत्री शक्तिपीठ भेजा गया, कुछ ने शिविर जाने की अपेक्षा शिविर में रहकर ही व्यवस्था बनाने में सहयोग करने को अपना युगधर्म माना। अगले दिन परिजनों के अथक परिश्रम से यज्ञ करने योग्य व्यवस्थाएँ बनाकर 108 कुण्डीय यज्ञ का अनवरत क्रम जारी रखा गया।

शुभ संकल्पों के साथ हुआ समापन

22 मई को प्रातःकाल यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ देवशक्तियों के प्रति आभार प्रदर्शन एवं सृजन सैनानियों का अभिनन्दन करते हुए उन्हें भावभरी विदाई दी गयी।

इस अवसर पर युग सेनानियों में कुंभ के अनुयाज के सकल्प उभरे। उन्हें जल स्रोतों का संरक्षण-संवर्धन करने, व्यक्तिगत रूप से 5 युवाओं को जोड़ने, 5 वृक्ष लगाने, अखण्ड ज्योति के 5 सदस्य बनाने, 5 नये घरों में देव स्थापना कराने तथा वर्षभर में 50 घरों में जाकर सम्पर्क करने की प्रेरणा दी गयी। 'व्यसन से बचाओ, सृजन में लगाओ' तथा 'खर्चीली शादियों हमें दरिद्र और बेईमान बनाती हैं' जैसे क्रांतिकारी वाक्यों का प्रचार-प्रसार प्रधानता से करने के सामूहिक संकल्प लिये गये।

- प्राकृतिक चिकित्सा उपचार एवं प्रशिक्षण केन्द्र, पारिवारिक परामर्श केन्द्र लगाया गया।
- 100 चित्रों के साथ 'युगऋषि को जानो' प्रदर्शनी लगाई गई।
- गायत्री परिवार के भोजनालय में प्रतिदिन लगभग 4000 लोगों ने भोजन-प्रसाद ग्रहण किया।

विशिष्ट वर्गों के सम्मेलन

सिंहस्थ महाकुंभ में शांतिकुंज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं की मुख्य उपस्थिति में कई बड़े सम्मेलन आयोजित हुए।

- आद. डॉ. प्रणव जी म.प्र. शासन द्वारा वैचारिक महाकुंभ में आमंत्रित थे।
- डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की मुख्य उपस्थिति में युवा सम्मेलन हुआ।
- आद. श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी ने युग निर्माण सम्मेलन की अध्यक्षता की।

युग निर्माण सम्मेलन के मंच पर श्री जोशी, साध्वी प्रज्ञा भारती, संत सत्या बाबा और आद. श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी

युग निर्माण सम्मेलन में संत समागम

सिंहस्थ-2016 में 17 मई को अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा युग निर्माण सम्मेलन आयोजित किया गया। कई प्रतिष्ठित संतों ने इसमें भाग लेते हुए 'युग निर्माण सत्संकल्प' के एक-एक सूत्र पर चर्चा की। शांतिकुंज के वरिष्ठ प्रतिनिधि आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी ने गायत्री परिवार का प्रतिनिधित्व किया। सभी ने एकमत से इन्हें युग परिवर्तन का सशक्त आधार माना। पूरी बुलंदी के साथ 'हमारा अभियान- युग निमाण, हमारा संधान-युग निर्माण, हमारा कल्याण-युग निर्माण' के नारे गूँजे।

आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी ने युग निर्माण सत्संकल्प को युग परिवर्तन का आधार बनने जा रहे अवतार का सूक्ष्म रूप बताया, जो जनमानस में आकांक्षा के रूप में अवतरित हो रहा है। उन्होंने कहा कि एकता, समता की सर्वांगपूर्ण रूपरेखा, वसुधैव कुटुम्बकम् की समग्र परिकल्पना युग निर्माण सत्संकल्प में की गई है। युग निर्माण सत्संकल्प में दूसरों को उपदेश देने की अपेक्षा आत्मनिर्माण पर सारा ध्यान केन्द्रित किया गया है।

धर्म जागरण समन्वय के प्रांतीय प्रमुख श्री गोपालकृष्ण जोशी महाराज ने कहा कि सिंहस्थ केवल स्नान पर्व नहीं, ज्ञान पर्व भी है। उन्होंने कहा कि प्रवचन देना सरल है, किन्तु प्रचवन को जीना कठिन है और युग निर्माण सत्संकल्प हमें जीना सिखाता है।

वृंदावन से आयी वैष्णवी साध्वी प्रज्ञा भारती ने युगऋषि के दिये सत्संकल्पों को अपनाते हुए जीवन को यज्ञमय बनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि परमार्थ के लिए किये गये यज्ञों की रक्षा भगवान स्वयं करते हैं।

संत सत्या बाबाजी, जयपुर वालों ने युग निर्माण सत्संकल्प के 9वें एवं 10वें सूत्र पर चर्चा में कहा कि सत्य धर्म का मूल है। उन्होंने लोभवश शिक्षा के व्यवसाय बन जाने पर चिंता व्यक्त की।

मध्य जोन के समन्वयक शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री विष्णु भाई पण्ड्या ने सम्मेलन में पधारे सभी संतों को गायत्री परिवार की ओर से सम्मानित किया।

किसान सम्मेलन

30 अप्रैल को विचार मंच पर किसान सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें जल, जमीन एवं जीवन के संवर्द्धन के लिए विचार मंथन किया गया। शान्तिकुंज प्रतिनिधि श्री कालीचरण शर्मा जी ने मिशन के विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि जिस प्रकार जप में गायत्री मंत्र जप श्रेष्ठ है, कर्म में सर्वश्रेष्ठ यज्ञ है, उसी प्रकार खेती सर्वश्रेष्ठ आजीविका का साधन है।

'विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन अनातुरम्' ऋग्वेद के इस मंत्र की व्याख्या करते हुए उन्होंने बताया कि सम्पूर्ण परिपुष्ट, आरोग्यवान विश्व का दर्शन हमें इन्हीं गाँवों में होना चाहिए। उन्होंने ऐसे आदर्श गाँवों के स्वरूप का विस्तार से चित्रण किया।

सम्मेलन में भाग लेते क्षेत्रीय किसान

डॉ. कलाम के विजन 20-20 की चर्चा करते हुए बताया कि हर गाँव में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग लगाकर घटती कृषि भूमि की पूर्ति की जा सकेगी।

जल संसाधन विशेषज्ञ श्री योगेन्द्र गिरि ने गायत्री परिवार के भागीरथी जलाभिषेक अभियान की चर्चा की तथा आगामी दिनों में क्षिप्रा नदी को सदानीरा बनाने के लिए अनेक कार्यक्रम चलाने की जानकारी दी।

सिंहस्थ की प्रादेशिक समिति में पहली बार गायत्री परिवार

पहली बार सिंहस्थ की प्रादेशिक समितियों में गायत्री परिवार को शामिल किया गया। पं. पुरुषोत्तम दुबे (उपजोन समन्वयक) को मठ/आश्रम व्यवस्था उपसमिति तथा श्री देवेन्द्रकुमार श्रीवास्तव (जिला समन्वयक) को साहित्य एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की उपसमिति का सदस्य बनाया गया। कुंभ को उद्देश्यपूर्ण बनाने के लिए गायत्री परिवार ने महत्त्वपूर्ण सुझाव दिये।

मेला क्षेत्र में लगाये जा रहे होर्डिंग

राज ईको ग्रुप के सौजन्य से हुआ ज्ञानयज्ञ

पूर्व योजना के अनुरूप ज्ञानयज्ञ को कुंभ का प्रमुख अभियान बनाया गया। ज्ञानयज्ञ के लिए समर्पित मिशन के नैष्ठिक परिजन और राज ईको ग्रुप, भीलगाँव, जिला खरगोन के प्रमुख श्री राजेश तँवर के सौजन्य से यह ज्ञानयज्ञ सम्पन्न हुआ। दो स्थानों पर साहित्य विक्रय केन्द्र लगाये गये। पूरे मेला क्षेत्र में लगभग 1000 बड़े-छोटे होर्डिंग, बैनर लगाये गये थे।

- 20 लाख रुपये का साहित्य ब्रह्मभोज में दिया गया।
- सद्विचारों के 8 लाख पैम्फलेट निःशुल्क बाँटे गये।
- 5 ज्ञानरथ और 100 कार्यकर्त्ता ने पूरे माह सेवा देते रहे।

आयुष महाकुंभ के मंच से योगासनों का प्रदर्शन

आयुष महाकुंभ

20 मई को विचार मंच पर प्रातः 11 बजे से 4 बजे तक मध्य प्रदेश प्राकृतिक चिकित्सा परिषद्, इंटरनेशनल नेचरोपैथी आर्गेनाईजेशन तथा गायत्री परिवार के संयुक्त प्रयास से आयुष महाकुंभ का आयोजन हुआ। इसमें प्रदेश के 300 से अधिक प्रतिनिधि तथा 500 से अधिक गायत्री परिजनों ने भाग लिया। श्री जयप्रकाश सूर्या (अग्रवाल), श्री विष्णुभाई पण्ड्या, श्री प्रदीप पाण्डे (उपाध्यक्ष, जन अभियान परिषद् म.प्र. सरकार) आदि की उपस्थिति में मिट्टी, पानी, हवा, अग्नि एवं वायु के समुचित उपयोग से स्वस्थ बने रहने के लिए अनेक विशेषज्ञों ने अपने विचार व्यक्त किये।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में प्रांतीय स्तर पर अग्रणी रहे पंजाब, गुजरात, दिल्ली व उत्तर प्रदेश के विद्यार्थियों का सम्मान

चारों प्रान्त के 111 छात्र-छात्राओं को सम्मानित करते आदरणीय श्री गौरीशंकर शर्मा व अन्य वरिष्ठ महानुभाव

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा-2015 में प्रांतीय स्तर पर प्रथम, द्वितीय व तृतीय आये विद्यार्थियों का शांतिकुंज में समारोहपूर्वक सम्मान किया गया। 20 से 23 मई तक चले इस समारोह के अंतिम दिन गुजरात, उत्तर प्रदेश, दिल्ली तथा पंजाब के कुल 111 विद्यार्थियों को स्मृति चिह्न, प्रशस्ति पत्र एवं नगद राशि प्रदान करते हुए सम्मानित किया गया।

शिविर के विदाई सत्र को संबोधित करते हुए शांतिकुंज के व्यवस्थापक श्री गौरीशंकर शर्मा जी ने कहा कि युवाओं में वायु की दिशा को मोड़ने की सामर्थ्य होनी चाहिए। यह सामर्थ्य विकसित करने के लिए देव संस्कृति के सूत्रों को जीवन में धारण करने की साधना करनी पड़ती है। इन सूत्रों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि बड़ों का सम्मान करना व छोटों को

हवा का रुख मोड़ सकते हैं सद्गुणी, सेवाभावी, चरित्रनिष्ठ युवा
- श्री गौरीशंकर शर्मा

प्यार देना यह एक ऐसी कला है, जिससे हर व्यक्ति को अपना बनाया जा सकता है।

डॉ. पीडी गुप्ता ने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा-2015 का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस क्रम में उन्होंने युवा क्रांति वर्ष के परिप्रेक्ष्य में देश के चयनित 100 जिलों में सितम्बर-16 से फरवरी-17 के बीच युवाओं के स्किल डेवलपमेंट हेतु शिविर लगाये जाने की जानकारी दी।

चार दिवसीय शिविर को श्री शिवप्रसाद मिश्र, डॉ. बृजमोहन गौड़, श्री कालीचरण शर्मा, श्री चक्रधर थपलियाल, श्री आर.के आमेटा, राजेश मिश्रा, मंगल गढ़वाल आदि ने संबोधित किया। शिविर में देश के 18 राज्यों के 300 से अधिक विद्यार्थी एवं उनके अभिभावक उपस्थित थे।

भोपाल में नारी जागरण संगोष्ठी

श्रीमती शेफाली पण्ड्या गोष्ठी को संबोधित करते हुए साथ में डॉ. चिन्मय पण्ड्या एवं सुश्री दुर्गा दीदी

भोपाल (मध्य प्रदेश) गायत्री शक्तिपीठ भोपाल पर 8 मई को बहिनों की विशेष गोष्ठी सम्पन्न हुई, जिसे शांतिकुंज प्रतिनिधि श्रीमती शेफाली पण्ड्या ने संबोधित किया। उन्होंने कहा कि नारी का आत्मीयतापूर्ण सुसंस्कृत आचरण केवल बच्चों को ही नहीं, बल्कि पूरे परिवार का मनोबल बढ़ाने वाला होता है। नारी जागरण अभियान युग निर्माण आन्दोलन का आधार है। बहिनें अपने गौरव को पहचानें, घर की देहलीज़ को लाँघें और समाज के नवनिर्माण में पूरे मनोयोग से जुट जायें।

श्रीमती शेफाली पण्ड्या के पहली बार भोपाल पहुँचने पर उनका भावभरा स्वागत हुआ। गोष्ठी में माननीय दुर्गा जीजी, साधना पारे, वंदना, मधु मुख्य रूप से उपस्थित थीं।

आपदा प्रबंधन दल, शांतिकुंज की दक्षता में जुड़ा नया अध्याय

देसंविवि के नरेन्द्र गिरि ने टेकला ग्लेशियर में लिया प्रशिक्षण

शांतिकुंज के आपदा प्रबंधन दल की दक्षता में एक नया अध्याय जुड़ा। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के नरेंद्र गिरी 14300 फीट की ऊँचाई पर स्थित टेकला ग्लेशियर में विशेष प्रशिक्षण लेकर लौटे।

गायत्री परिवार के आपदा प्रबंधन दल ने देश के कोने-कोने में आने वाली राष्ट्रीय आपदाओं में बढ़-चढ़कर योगदान दिया है। मानवता की सेवा में त्वरित सक्रियता अपनायी है। यह दल देशभर में गठित गायत्री परिवार की आपदा प्रबंधन वाहिनियों एवं अन्य स्वयंसेवी संगठनों को समय-समय पर प्रशिक्षण भी देता रहा है। इस दृष्टि से दल के एक सदस्य का पर्वतारोहण के साथ विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करना बहुत उपयोगी और बड़े गौरव की बात है।

ग्लेशियर में आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण आमतौर पर सेना के जवानों के लिए होता है। लेकिन गायत्री परिवार की सक्रियता को देखते हुए नेहरू इंस्टीट्यूट ऑफ माउंटेनियरिंग उत्तरकाशी के प्रधानाचार्य कर्नल अजय कोठियाल के नेतृत्व में चले इस प्रशिक्षण शिविर में पहली बार गायत्री परिवार को आमंत्रित किया गया था। एक माह तक चले शिविर में 72 लोगों ने भाग लिया।

शिविर से लौटे नरेन्द्र गिरि ने आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं आदरणीया शैल जीजी सहित वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं को प्रशिक्षण की उपलब्धि एवं चुनौतियों की जानकारी दी। जीजी-डॉ. साहब ने कहा कि इस दक्षता से निःसंदेह हमारी कार्यकुशलता में वृद्धि होगी।

भा.सं. ज्ञान परीक्षा हरियाणा का प्रांतीय पुरस्कार वितरण समारोह

फरीदाबाद (हरियाणा)

हरियाणा राज्य प्रावीण्य छात्र एवं शिक्षक सम्मान समारोह 13 मई को फरीदाबाद के नगर निगम ऑडिटोरियम में आयोजित हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या, विधायक श्रीमती सीमा तिरखा, श्री सी.वी. रावल, चेअरमैन इंजीनियरिंग इन्स्टीट्यूट एवं जनसेवक श्री गोपाल शर्मा थे। लगभग 800 शिक्षाविद और होनहार विद्यार्थियों की उपस्थिति में प्रांतीय वरीयता प्राप्त विद्यार्थियों को इस समारोह में सम्मानित किया गया।

डॉ. चिन्मय जी ने बताया कि भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा कैसे नेपाल, भूटान, मॉरिशस सहित 7 देशों के 70 लाख छात्रों को देव संस्कृति के गौरवशाली पक्ष से अवगत करा रही है। उन्होंने देव संस्कृति

डॉ. चिन्मय पण्ड्या एवं श्री सी.वी. रावल प्रांतीय वरीयता प्राप्त विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए

विश्वविद्यालय की शिक्षा प्रणाली और उपलब्धियों का परिचय भी दिया।

श्रीमती त्रिखा, श्री रावल और श्री गोपाल शर्मा ने गायत्री परिवार द्वारा संचालित युग निर्माण योजना और भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा को राष्ट्र एवं युवाओं के निर्माण तथा संस्कृति के प्रति युवाओं में आकर्षण पैदा करने वाला अतुलनीय कार्य बताया।

भासंज्ञाप प्रकोष्ठ समन्वयक शांतिकुंज प्रतिनिधि डॉ. पी.डी. गुप्ता ने शिक्षकों से परम पूज्य गुरुदेव के उद्घोष 'अध्यापक हैं युग निर्माता, छात्र राष्ट्र के भाग्य विधाता' को चरितार्थ करने का आह्वान किया। शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री आर.एन. सिंह, श्री राजेश मिश्रा, श्री रामावतार पाटीदार तथा स्थानीय श्री प्रभाकर राव शुक्ला, श्री एन. सिंह ने सामारोह की सफलता में विशिष्ट सहयोग प्रदान किया।

खिले कमल शांतिकुंज की बगिया में

शांतिकुंज की गोशाला में सेवाएँ प्रदान कर रहे समर्पित कार्यकर्त्ता श्री नारायण एवं श्रीमती मीरा यादव की बेटी चि. दिव्या ने इस वर्ष सीबीएसई की 12वीं कक्षा की परीक्षा में पूरे हरिद्वार जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया। 97.4 प्रतिशत अंकों के साथ उसकी यह उपलब्धि गायत्री विद्यापीठ और शांतिकुंज के लिए एक गौरव की बात है। चि. दिव्या की यह सफलता उन विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायी है जो सामान्य परिस्थितियों में रहते हुए बड़े उद्देश्यों के लिए जीना चाहते हैं, जिनमें कुछ कर गुजरने की उमंग है।

गुरुदेव के आदर्शों के अनुरूप जीवन जीना चाहती है दिव्या

चि. दिव्या का कहना है कि यह उसका लक्ष्य नहीं, मात्र एक पड़ाव है। उसका सपना है गुरुदेव-माताजी की आकांक्षाओं के अनुरूप जीवन साधना करते हुए उस ऊँचाई को प्राप्त करना, जहाँ से वह समाज की बड़ी सेवा करते हुए अपनी गुरुसत्ता को गौरवान्वित कर सके। उसने वर्षों से भारतीय प्रशासनिक सेवा में जाने का लक्ष्य निर्धारित कर रखा है।

दिव्या ग्राम ढढनी, जिला गाजीपुर (उत्तर प्रदेश) से अपने माता-पिता के साथ सन् 2005 में शांतिकुंज आयी थी। उसने यहाँ आकर गायत्री विद्यापीठ में तीसरी कक्षा में प्रवेश लिया, तब उसे हिन्दी के अलावा कुछ भी लिखना-पढ़ना नहीं आता था। शांतिकुंज के वातावरण ने उसकी सोच बदली। माता-पिता, बुआजी-फूफाजी (श्रद्धेया जीजी-श्रद्धेय डॉ. साहब) और गायत्री विद्यापीठ के शिक्षकों से उसे प्रेरणा-प्रोत्साहन मिलता गया, उसकी सोच और व्यक्तित्व में निखार आता गया।

नियमित उपासना और गुरुदेव के साहित्य ने दिव्या के जीवन को सँवारने में बहुत सहयोग किया। वह प्रातः एक घण्टा गायत्री उपासना करती है एवं नियमित रूप से अखण्ड ज्योति पत्रिका व अन्य साहित्य पढ़ती है। दिव्या बताती है कि 10वीं कक्षा के बाद अवकाश के तीन महीनों में उसने गुरुदेव का साहित्य खूब पढ़ा। 'हमारी वसीयत और विरासत', 'सुनसान के सहचर' तथा क्रांतिधर्मी साहित्य से वह बहुत प्रभावित हुई, प्रेरणा ली। इसी साहित्य ने उसके जीवन का लक्ष्य निर्धारित किया।

दिव्या कहती है- ''जब भी मेरे सामने कोई समस्या आयी तो

प्रशासनिक सेवा में जाने की है उमंग
• दिव्या यादव

उसका समाधान मैंने गुरुदेव के साहित्य में ही खोजा और पाया। इस साहित्य ने मुझे हर पल ऊर्जावान बनाये रखा है। ''

दिव्या ने साधन-सुविधाओं का अभाव कभी अनुभव नहीं किया और न ही इन्हें जुटाने की उसकी कोई चाह है। वह कहती है, ''हमारी अमीरी गुरुदेव के सान्निध्य में है। उनके विचार और संस्कार ही हमें महानता की ओर ले जायेंगे।'' इसी उदात्त चिंतन के कारण व सामान्य परिस्थिति में भी शानदार सफलता हासिल कर सकी।

माता-पिता की प्रेरणा

श्री नारायण यादव शांतिकुंज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता हैं। वे पिछले 12 वर्षों से गोसेवा कर रहे हैं। वे अपने लक्ष्य और कर्त्तव्य के लिए इतने समर्पित हैं कि शांतिकुंज में अपने आवास पर भोजन आदि आवश्यक कार्यों के लिए ही आते हैं और रात गोशाला में रहकर गोमाता की सेवा में ही बिताते हैं।

दिव्या बताती है कि पिताजी की गुरुभक्ति और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रभाव उसके जीवन और शिक्षा पर भी पड़ा है। अपनी माँ से सहनशीलता सीखी है। इन्हीं गुणों को साथ लेकर वह अपने लक्ष्य की ओर सतत बढ़ती रही है।

आत्मविश्वास व आत्मनिर्भरता

यह शानदार सफलता उन विद्यार्थियों के लिए भी एक प्रेरणा है जो ट्यूशन पर निर्भर रहते हैं। दिव्या कहती है मुझे अपनी मेहनत पर पूरा भरोसा था और अपने गुरुजनों के सहयोग में कोई कमी नहीं थी, इसलिए ट्यूशन में समय की बरबादी, मानसिक थकान तथा दूसरे विद्यार्थियों के नकारात्मक प्रभावों से दूर रहने का मुझे पूरा-पूरा लाभ मिला।

शिक्षकों की भूमिका

गुरुदेव ने गुरुजनों को 'युग निर्माता' कहा है, वह अक्षरशः सत्य है। मेरी सफलता में मेरे गुरुजनों की प्रेरणा और सहयोग की बहुत बड़ी भूमिका है। उन्होंने मुझे समाजसेवा के योग्य बनने के संदर्भ में सतत प्रोत्साहन और मार्गदर्शन दिया है। जब भी कोई कठिनाई होती, निर्भीक होकर उनके पास पहुँच जाती थी और समाधान पाकर ही लौटती थी।

सर्वांगीण प्रगति

ऐसा नहीं है कि दिव्या दिन-रात केवल पढ़ाई में ही डूबी रही। हाँ, 12वीं कक्षा में जरूर उसने अपना पूरा ध्यान पढ़ाई पर केन्द्रित कर लिया था। इससे पूर्व वह विद्यालय की हर गतिविधि-खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विभिन्न प्रतियोगिताएँ आदि में भाग लेती रही है। वह बताती है कि शिक्षा के साथ जीवन को सद्गुणों से अलंकृत करने के लिए वह सदैव प्रयत्नशील रही है। भविष्य में भी वह प्रभावशाली पद के साथ आदर्श व्यक्तित्व से समाज को सन्मार्ग की ओर ले जाने के प्रयास करती रहेगी।

गायत्री विद्यापीठ का उत्कृष्ट प्रदर्शन

गायत्री विद्यापीठ, शांतिकुंज के विद्यार्थियों ने इस वर्ष भी अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन की परम्परा बनाये रखी। इस वर्ष हुई 12वीं कक्षा की सीबीएसई परीक्षा में विद्यालय के 83 बच्चे सम्मिलित हुए, जिनमें से 56 छात्र-छात्राओं ने प्रथम श्रेणी में तथा शेष ने द्वितीय श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण की। 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाली अन्य छात्राएँ हैं-

रिंशु तिवारी (94.6)

पूर्णिमा सिंह (94.2)

आकृति (90.2)

प्रज्ञा अभियान
16 जून 2016

उत्तराखंड में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा आरंभ करायेगी प्रादेशिक सरकार

शांतिकुंज में 1 से 3 जून की तारीखों में राजस्थान, पंजाब एवं हरियाणा के शिक्षकों के लिए आयोजित शिक्षक गरिमा शिविर के उद्घाटन सत्र में माननीय मुख्यमंत्री जी ने दिया आश्वासन

"आज के रोबोटिक युग में दुनिया बहुत आगे बढ़ी है, कार्य भी अचूक हो रहे हैं। लेकिन उन रोबोटों को निर्देश देने वाले मनुष्य गुणवान न हों, उनमें संवेदना और विवेक न हो तो ये रोबोट समाज का भला कैसे करेंगे। इसलिए आज मनुष्य को रोबोटिक सोच से बाहर निकालने के लिए संस्कारों की आवश्यकता है।

गायत्री परिवार ने सारे देश और विश्व में अपने संस्कार, संवेदना और सेवा भावना से एक अलग ही पहचान बनाई है। आपके द्वारा विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के माध्यम से गुणवान, संस्कारवान बनाने के प्रयास प्रशंसनीय हैं। हम भी भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा को प्रदेश में अनिवार्य करने वाले दूसरे राज्यों के अनुभव का लाभ लेंगे और इसे उत्तराखंड में भी प्रारंभ करेंगे।"

माननीय श्री हरीश रावत, मुख्यमंत्री, उत्तराखंड

माननीय मुख्यमंत्री जी के साथ माननीय डॉ. प्रणव जी बाँये मंच पर तथा दायें ऋषियुग्म के स्मारकों पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए

गंगा की तरह गायत्री परिवार की अलग पहचान है

(माननीय मुख्यमंत्री जी के उद्बोधन के मुख्य अंश)

• जैसे सारे विश्व में गंगा की पहचान है, वैसे ही गायत्री परिवार भी अपनी निःस्वार्थ सेवा और समर्पण भाव के लिए अलग ही पहचान रखता है। गायत्री मंत्र तो सनातन है, गुरुदेव के साथ आप सबने मिलकर अपने जीवन से उसका दर्शन और माहात्म्य जन-जन तक पहुँचाया है।

• शांतिकुंज पावनतीर्थ हरिद्वार की आत्मा है। शांतिकुंज और हरिद्वार एक-दूसरे के पर्यायवाची हैं। हरिद्वार आने वाला तीर्थयात्री शांतिकुंज के दर्शन कर अलौकिक शांति, वैचारिक आश्रय और भावनात्मक संतुष्टि पाता है।

• मैं गायत्री परिवार की मानवीय संवेदनाओं से बहुत प्रभावित हूँ। जहाँ भी आपदा आती है, प्रयास करता हूँ कि सबसे पहले वहाँ मैं पहुँचूँ। लेकिन वहाँ जाकर देखता हूँ कि गायत्री परिवार के लोग पहले से ही वहाँ लोगों को सांत्वना दे रहे हैं, सहयोग कर रहे हैं।

• गायत्री परिवार लक्ष्य को ध्यान में रखने वाला परिवार है। इसीलिए देव संस्कृति विवि. प्राइवेट विश्वविद्यालयों में अग्रणी है। व्यावसायिक चकाचौंध से दूर रहकर इसने मानवीय उत्कर्ष के लक्ष्य को पूरा किया है।

देवभूमि की गरिमा को बनाये रखने में पूरा सहयोग देंगे

(माननीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के उद्बोधन के मुख्य अंश)

• उत्तराखंड के सामने अनेक प्राकृतिक चुनौतियाँ हैं, उसी प्रकार इस देवभूमि की गरिमा को बनाये रखने के लिए देव संस्कृति को घर-घर पहुँचाने की आवश्यकता है। सद्गुणों की खेती करने का नाम है संस्कृति। भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा विद्यार्थियों को देव संस्कृति की ओर आकर्षित कर उन्हें संस्कारवान बना रही है। देश के एक लाख विद्यालयों के 50,00,000 विद्यार्थी इस परीक्षा में भाग लेते हैं।

• केदारनाथ में आयी आपदा के समय हमने 200 बड़े विद्यालयों का निर्माण कराया था। पहाड़ी क्षेत्रों में 5-6 कि.मी. पैदल चलकर विद्यालय जाने की हूक हमने देखी है। हम उन्हें संस्कारवान बनाकर देवभूमि की गरिमा को बनाये रखने में हर प्रकार से सहयोग देंगे।

• देश की हर बड़ी आपदा में हमारा अग्रणी सहयोग रहा है, उत्तराखंड की आपदाओं में सहयोग की परम्परा को निभाते रहेंगे। शांतिकुंज ने घनसाली में बादल फटने से प्रभावित 1500 लोगों की सहायता के लिए एक ट्रक राहत सामग्री भेजी है।

• 2025 तक गंगा जलाभिषेक अभियान के अंतर्गत गंगा को पूरी तरह स्वच्छ बनायेंगे। आपदाओं को कम करने के लिए 50 करोड़ पेड़ लगायेंगे।

दिव्या यादव को छात्रवृत्ति भेंट करते श्री रावत एवं आदरणीय डॉ. प्रणव जी

50,000 रुपये की यह छात्रवृत्ति आदरणीय डॉ. साहब के पिता सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति श्री सत्यनारायण पण्ड्या की ओर से हरिद्वार जिले में 12वीं कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर भेंट की गयी है।

डॉ. साहब ने बड़ी लकीर खींच दी

मुख्यमंत्री जी आदरणीय डॉ. साहब का अभिनंदन करते हुए

शांतिकुंज आने पर मुख्यमंत्री जी ने सबसे पहले ऋषियुग्म के स्मारकों पर पुष्पांजलि अर्पित की। तत्पश्चात् मंच पर आते ही उन्होंने राज्यसभा की सदस्यता को विनम्रता पूर्वक अस्वीकार करते हुए धर्मतंत्र में एक आदर्श प्रस्तुत करने पर आदरणीय डॉ. साहब का शॉल उढ़ाकर, पुष्पगुच्छ अर्पण कर अभिनंदन किया।

अपने उद्बोधन में कहा कि राज्यसभा की सदस्यता मिलना अपने आप में बड़े सम्मान की बात है, लेकिन धर्मतंत्र का स्थान राजतंत्र से बहुत ऊँचा है। आपके इस त्याग ने धर्मतंत्र में एक बड़ी लकीर खींच दी है।

व्यक्तित्व को परिष्कृत करने वाले जीवन-दर्शन के रूप में जन-जन तक पहुँचे योग

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रमों के संचालन हेतु प्रशिक्षण देने वाले प्रशिक्षकों के लिए आयोजित शिविर में किया गया आह्वान

5000 से अधिक कार्यक्रम गायत्री परिवार द्वारा होंगे

भासंज्ञाप से जुड़े विद्यालयों में भी होंगे कार्यक्रम

दिनभर की जाने वाली योग साधना-प्रज्ञायोग का दर्शन जन-जन तक पहुँचाया जायेगा

आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी प्रशिक्षक-प्रशिक्षण शिविर को संबोधित करते हुए

दिनांक 29 से 31 मई तक शांतिकुंज में देश के हर उपजोन से आमंत्रित प्रतिनिधियों का विशेष योग प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। उन्हें 21 जून के दिन अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा आयोजित होने वाले कार्यक्रमों का प्रयोजन, योग का दर्शन और कार्यक्रम संचालन की व्यवस्था विस्तार से बतायी गयी।

प्रशिक्षित परिजन रीसोर्स पर्सन के रूप में अपने-अपने उपजोनों में जिले स्तर पर प्रशिक्षण शिविर आयोजित करेंगे। अधिक से अधिक कार्यकर्त्ताओं को केन्द्रीय निर्धारणों से अवगत कराकर, प्रशिक्षण देकर 21 जून को अधिक से अधिक नगर, गाँव, गली, मोहल्ले, विद्यालयों में कार्यक्रमों का आयोजन कराने के लिए प्रेरित करेंगे, ताकि योग की पहचान आसन, प्राणायाम तक ही सीमित न रहे, यह जीवन जीने की कला के समग्र दर्शन के रूप में जन-जन तक पहुँचाये।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस-21 जून 2016

गायत्री परिवार द्वारा किये जाने वाले कार्यक्रमों के लिए निर्धारित कार्यक्रमों का विवरण
(समय प्रातःकाल 2 घंटे का कार्यक्रम)

गायत्री महामंत्र की सामूहिक साधना	2 मिनट
सूक्ष्म व्यायाम	10 मिनट
राष्ट्रीय सामान्य योगाभ्यास क्रम	45 मिनट
ॐ कार गुंजन (3 बार)	2 मिनट
संगच्छध्वं संवदध्वं .... प्रार्थना	2 मिनट
आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का ऑडियो संदेश	15 मिनट
प्रज्ञायोग	15 मिनट
आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी का ऑडियो संदेश	10 मिनट
प्रार्थना - सर्वे भवंतु सुखिनः ...	1 मिनट
शांतिपाठ	1 मिनट

तीन दिवसीय शिविर में गुरुदेव के द्वारा बतायी समग्र योग साधना-प्रज्ञायोग पर विस्तार से चर्चा हुई। (देखें प्रज्ञा अभियान 1 जून 2016 का संपादकीय आलेख)

आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी ने कहा कि जीवन को कुयोगों से बचाना और सुयोगों का लाभ उठा लेना योगी की सबसे बड़ी उपलब्धि है। इसके लिए आहार, विहार, व्यवहार सभी की साधना करनी होती है।

हर योगाभ्यासी को योग के दो बुनियादी चरण 1.यम (सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य) अर्थात् अनुशासन और 2. नियम (शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान) के अभ्यास पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

श्री कालीचरण शर्मा जी ने कहा कि योग जीवन भर चलने वाली साधना है, 21 जून का आयोजन तो उसकी ओर ध्यानाकर्षित करने वाला एक पड़ाव है।

भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व-समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, बहादुरी को जीवन में उतारना योग का उद्देश्य है। गायत्री के तत्व चिंतन से प्रज्ञा जागती है, तब धर्म मंदिर-मस्जिदों तक नहीं रह जाता, वह जीवन में उतरता है। यही प्रज्ञायोग है।

गुरुदेव कहते थे कि 5 पुरुषों से देश नहीं बनता, देश को बदलने के लिए करोड़ों लोगों को महानता का वरण करना होगा। इस महानता का वरण करने की साधना ही सच्ची योग साधना है।

डॉ. विजय चौहान, प्रतिनिधि देसंविवि ने आसान, प्राणायाम, ध्यान से शारीरिक, मानसिक, आत्मिक दोषों को दूर करने वाले योग के प्रभावों की चर्चा की।

विशेष ध्यानाकर्षण

- प्रशिक्षण शिविर में आये शिविरार्थियों को आवश्यक सामग्री उपलब्ध करा दी गयी है। उद्बोधन की विषय वस्तु वाले परचे, राष्ट्रीय प्रोटोकॉल के अंतर्गत कराये जाने वाले योगाभ्यासों की जानकारी आदि उन्हें दे दी गयी है।
- आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी के ऑडियो संदेश सहित समस्त आवश्यक सामग्री शांतिकुंज की वेबसाइट www.awgp.org पर भी उपलब्ध है।
- नेपाल के 70 प्रतिनिधि इस प्रशिक्षण शिविर में उपस्थित थे।
- देश के प्रत्येक उपजोन स्तर पर प्रशिक्षण देने के लिए टोलियाँ शांतिकुंज से रवाना हो रही हैं।

-: प्रमुख संपर्क सूत्र :-
(समय प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक)
पूछताछ : 09258369725
email : pragyaabhiyan@awgp.in
डिस्पैच विभाग : 09258360665
email : dispatch@awgp.org
समाचार संपादन : news@awgp.in

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा सेंचुरी ऑफसेट प्रिंटर्स, ऋषिकेश में मुद्रित। संपादक- वीरेश्वर उपाध्याय
पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411.
फोन-(01334) 260602 फैक्स-(01334) 260866

RNI-NO.38653/ 80
R.No.UA/DO/DDN/ 16 /2015-17
LICENCE TO POST
W.O. PREPAYMENT
vide No. WPP/ 04
RENEWED 2015- 2017